(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 6, दिसम्बर, 2019
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

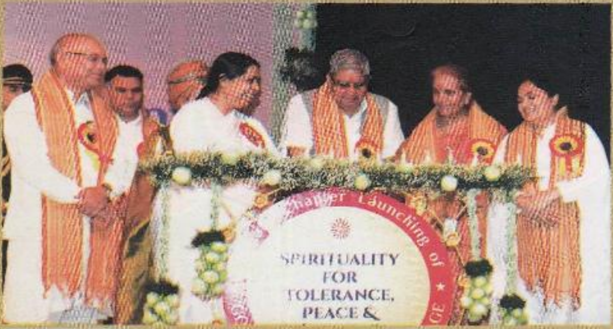

1.कोलकाता (म्यूजियम)- 'गॉडस् पावर फॉर गोल्डज एज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता जगदीप धनखड़, बहन सुदेश धनखड़, ब्र.कु.सूरज भाई, ब्र.कु.कानन बहन तथा अन्य। **2.सुन्नी (शिमला)-** उप-सेवाकेन्द्र के द्वितीय वार्षिक उत्सव का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता बंडारू दत्तात्रेय। साथ में ब्र.कु.प्रकाश भाई, ब्र.कु.अंजलि बहन, ब्र.कु.अनिता बहन, ब्र.कु.शकुन्तला बहन तथा ब्र.कु.रेवादास भाई। **3.गांधीनगर-** गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी को दीपावली, भाई दूज तथा नववर्ष की बधाई देते हुए ब्र.कु.कैलाश बहन। **4.दुमका (झारखण्ड)-** आध्यात्मिक दर्शन मेले का उद्घाटन करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मू। साथ में ब्र.कु.जयमाला बहन तथा ब्र.कु.कुसुम बहन। **5.शान्तिवन-** ब्र.कु.मुन्नी बहन को, ईश्वरीय सेवा के 50 वर्ष पूरे होने पर वर्ल्ड बुक ऑफ रेकार्ड्स, लंदन द्वारा सम्मानित करते हुए वर्ल्ड बुक ऑफ रेकार्ड्स, लंदन के प्रतिनिधि डॉ.दीपक हरके। साथ में राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा अन्य। **6.करनाल (सेक्टर-9)-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर लाल खट्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.निर्मल बहन। **7.बयाना (भरतपुर)-** राजस्थान के उप-मुख्यमंत्री भ्राता सचिन पायलेट को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बबीता बहन। **8.जमशेदपुर (कादमा)-** चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए समाजसेवी भ्राता मनमोहन सचदेवा, झारखण्ड के खाद्य तथा आपूर्ति मन्त्री भ्राता सूर्य राय, ब्र.कु.संजू बहन तथा अन्य। **9.अडयार (चेन्नई)-** सम्मान समारोह का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी इशु जी, ब्र.कु.बीना बहन, ब्र.कु.कविता बहन तथा अन्य।

स्वयं को अहंकार से बचाओ

अहंकार से मनुष्य दूसरों पर आतंक करता है, उन्हें अपने से बहुत घटिया मान कर उनसे दुर्व्यवहार करता है, अपने रोब तले दबाए रखता है तथा अपमानित करता है। वह उनके मन को ठेस पहुँचा कर, उन्हें अपने विरुद्ध कर लेता है तथा विद्रोह करने पर मजबूर कर देता है। वह मिथ्या अभिमान में मानसिक सन्तुलन खो बैठता है, अपनी जिह्वा को कुठार की न्यायीं प्रयोग करता है और एक दिन पर्वत पर से गिरने के समान अपने जीवन में चोट अनुभव करता है, तब अपने ही कर्मों के कारण उसे अपना सिर नीचे करना पड़ता है। अत: अहंकार अनेक झगड़ों की जड़ है। अहंकार के नशे में मनुष्य यह भूल जाता है कि देह नश्वर है, धन और सत्ता सदा साथ नहीं रहते और यौवन तथा शक्ति भी अस्थिर हैं।

अहंकार ही का एक रूप 'ज़िद्द' है। कई बार मनुष्य अपनी बात को गलत समझते हुए भी गलती मानने को तैयार नहीं होता क्योंकि वह समझता है कि इससे मेरे मान में कमी होगी। मान-अपमान की इस मिथ्या धारणा के आधार पर खड़ा होकर वह अपना सब कुछ गँवाने को तैयार हो जाता है परन्तु अपनी ज़िद्द नहीं छोड़ता। व्यक्ति के इसी झूठे अभिमान के परिणामस्वरूप परिवार तबाह हो जाते हैं और राज्य धूली-धूसरित हो जाते हैं। अत: अच्छा तो यह है कि मनुष्य अभिमान को छोड़ कर इस श्रेष्ठ स्वमान को धारण करे कि 'मैं त्रिलोकीनाथ परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ...।' आत्मा के स्वमान में स्थित होने से ही मनुष्य निन्दा, अपमान, हानि आदि की परिस्थितियों में भी शान्त, शीतल, अचल एवं आनन्दमय रहता है। यह स्वमान उसकी वास्तविक शक्ति का सूचक है।

अहंकार ही का एक रूप अपनी महिमा सुनने का चाव है। अहंकारी मनुष्य अपनी सही आलोचना भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। यदि उसका अपना कोई मित्र हित भाव से भी किसी दुर्गुण को दूर करने के लिए उसे सुझाव देता है, तो उसे भी वह अपना अपमान मानता है। अपने दुर्गुण की आवश्यकता जतला कर, उसका कोई ऊँचा-सा लक्ष्य बता कर, उसके होने के कई कारण समझा कर उसे सुन्दर रूप में पेश करने की कोशिश तो वह करता है परन्तु अहंकार की छाया बुद्धि पर पड़ जाने से उसे यह भी नहीं सूझता कि दूसरों में भी इतनी समझ तो है कि वे मेरी इस लम्बी व्याख्या को समझते हैं।

अहंकारी मनुष्य को अपनी खुशामद और चापलूसी सुनने की आदत ही पड़ जाती है और जो कोई भी उसकी बात पर प्रश्न उठाता है, उसे वह अपनी आँख का शहतीर मानता है। अपनी बुराई को छिपाने के लिए वह दम्भ को अपनाने लगता है और इस प्रकार दिनोंदिन गिरावट की ओर बढ़ता है। अत: अहंकार के इस अशुद्ध रूप को छोड़ कर इसे शुद्ध करने में ही मनुष्य का भला है। 'नम्रता' को धारण करने से अहंकार स्वत: मिट जाता है।

अमृत-सूची

- संजय की कलम से 3
- मानव का दिव्यीकरण (सम्पादकीय) 4
- इन्टरनेट और अंतरनेट 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 8
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- हिम्मत 11
- सावधान! मित्र रूप में शत्रुओं को पहचानो 14
- किसान सशक्तिकरण - जैविक-यौगिक खेती द्वारा 17
- भगवान धरा पर आये हैं (कविता) 20
- ऑस्ट्रेलिया वालों के जीवन में आस है, विश्वास है 21
- नकद प्यार है ... (कविता) 24
- राजयोग की उपलब्धियाँ 25
- जेल में हुआ नया जन्म (अनुभव) 27
- तुमसे प्रीत लगाई है (कविता) 27
- ज्ञानी तू आत्मा 28
- सचित्र सेवा-समाचार 29
- बाबा ने स्वप्न में खुलवाया त्रिमूर्ति क्लिनिक (अनुभव) 30
- सचित्र सेवा-समाचार 32

मानव का दिव्यीकरण

आज संसार में मुख्यतः सात बातों के बारे में चर्चा-परिचर्चा है। संस्थाएँ तथा व्यक्ति उन्हीं सात में से किन्हीं एक-दो को लेकर कुछ-न-कुछ करने में प्रयत्नशील हैं। चर्चा के वे सात विषय हैं – 1.नई-नई खोज करना और साक्षरता फैलाना, 2.अधिकार की मांग, 3.स्वतन्त्रता की प्राप्ति, 4.निर्धनता को मिटाना और जीवन-स्तर ऊँचा करना, 5.जन-संख्या में भयावह वृद्धि और उसके लिए सन्तति नियंत्रण, 6.विज्ञान और सभ्यता द्वारा उत्पन्न समस्यायें और 7.अनुशासन की कमी तथा पारस्परिक सम्बन्धों में विषमता। आज हम इन में से कुछ विषयों पर चर्चा करेंगे।

1.नई खोज और साक्षरता

मनुष्य को खोज और शोध कार्य के लिए जितने साधन और जितनी सुविधायें आज उपलब्ध हैं, उतनी शायद पहले कभी नहीं थीं। अतः पिछले लगभग 200 वर्षों में संसार की ज्ञान-राशि में कल्पनातीत वृद्धि हुई है परन्तु विडम्बना यह है कि एक ओर तो समाज साक्षरता के लिए भरसक यत्न कर रहा है और दूसरी तरफ हर आए दिन विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में उनकी पाठ्य परिधि को भी बढ़ाया जाता है। तीसरी ओर समाज में असन्तोष बढ़ता हुआ दिखाई देता है। यद्यपि आज मनुष्य चाँद, मंगल और बृहस्पति इत्यादि ग्रहों के बारे में खोज करने में सक्षम हुआ है और भौतिकी में चार्म्ड पार्टीकल्स तथा परमाणु के हेड्रोन्स, क्वार्क्स इत्यादि तक जा पहुँचा है और शरीर के भी जैनेटिक कोड के रहस्य को उसने जान लिया है तथापि इन सबको जानने वाले स्वयं को वह नहीं जानता। यह जो उक्ति है कि ज्ञान का प्रकाश, शक्ति और दिव्यता देने वाला है, इसका मनुष्य पर कोई नैतिक प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता। आज मनुष्य ने ज्ञान और विज्ञान की अनेक सूक्ष्म और गहन बातों को तो जान लिया है परन्तु उस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाया जिससे उसमें शान्ति, सन्तोष, सद्भावना, सहानुभूति, सहअस्तित्व और सदाचार का विकास हो।

2.अधिकार

आज कहीं पर राजनीतिक, कहीं सामाजिक, कहीं वैधानिक और कहीं आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष हो रहा है। एक अधिकार की प्राप्ति के लिए किए गए संघर्ष में सफलता पा लेने के बाद मनुष्य के जीवन में एक दूसरी प्रकार का संघर्ष चल पड़ता है। और तो क्या, आज अधिकार की परिभाषा क्या है तथा मनुष्य के कौन-कौन से अधिकार मौलिक अधिकार हैं – इन प्रश्नों को लेकर काफी चर्चा-परिचर्चा होती है और समाज में जहाँ-तहाँ संघर्ष बढ़ा हुआ है। परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि मानव इन सांसारिक अधिकारों के लिए

तो इतना हो-हल्ला करता है परन्तु उसका जो ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है, उसके लिए वह सतर्क नहीं है। आज हरिजनों, मजदूरों, किसानों, नागरिकों और महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए नारे तो लगाये जाते हैं और निस्संदेह इनको अधिकार मिलने भी चाहिएँ परन्तु मनुष्य उस अधिकार को प्राप्त करने के बारे में अचेत अथवा निश्चेष्ट-सा है जिसकी प्राप्ति से उसे सर्व अधिकार स्वत: ही मिल जायेंगे और जिसके बाद अधिकार और कर्त्तव्य की लड़ाई बन्द हो जाएगी। किन्तु ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार तो पवित्र अधिकार हैं जो कि मनुष्य के दिव्यीकरण से ही प्राप्त हो सकते हैं।

3.स्वतन्त्रता

हर ओर, हर लब पर आज स्वतन्त्रता का ही नारा है। परन्तु फिर भी हम देखते हैं कि न चाहने पर भी मनुष्य आज कई प्रकार के बन्धनों में बन्धा है। अपने कर्मों के, अपने संस्कारों के, अपनी आदतों के, परिस्थितियों और वातावरण के अथवा रोग और शोक के बंधनों में बंधा है। काश, मनुष्य ऐसी स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न करता जिससे ये सभी प्रकार के बंधन टूक-टूक हो जाते हैं, परिस्थितियों की बेड़ियाँ और संस्कारों की हथकड़ियाँ सदा के लिए टूट जाती हैं और मनुष्य विकारों की जेल से मुक्त हो जाता है।

4.निर्धनता दूर करने और जीवन-स्तर ऊँचा करने की चर्चा

वर्तमान दौर एक ऐसा दौर है जबकि हर देश की सरकार का ध्यान निर्धनों का जीवन-स्तर ऊँचा करने तथा पूँजीपतियों द्वारा किसानों व मजदूरों का शोषण रोकने की ओर गया है। परन्तु जबकि दिनोंदिन जनसंख्या बड़ी तीव्र गति से बढ़ रही है और जीवन-स्तर के बारे में भी कोई स्थिर दृष्टिकोण नहीं है बल्कि मनुष्य अधिकाधिक सुविधाएँ चाहता है, तो भला निर्धनता को कैसे दूर किया जा सकता है। पुनश्च, मनुष्य का साथ देने वाला धन तो ज्ञान-धन, चरित्र-धन और उसके ऊँचे कर्म हैं। आज इनकी तरफ लोगों का कहाँ तक और कितना ध्यान है? इनके बिना जीवन में सच्चा सुख और सच्ची शान्ति कैसे सम्भव हो सकती है? अत: इस विषय में भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान-धन द्वारा मनुष्य की मानसिक और बौद्धिक दरिद्रता दूर करने और उसे दिव्य बनाने की जरूरत है।

आज भाषा-भेद, धर्म-भेद, नीति-भेद, प्रान्त-भेद, रंग-भेद इत्यादि भेदों को लेकर मनुष्य, मनुष्य को शत्रुता की दृष्टि से देख रहा है। जीवन में नैतिक मूल्यों का और दिव्यता का ह्रास स्पष्ट दिखाई देता है जिसके कारण संसार में खलबली मची हुई है। कोई स्थिर नैतिक मूल्य नहीं जिनसे कि मनुष्य का व्यवहार और आचरण नियंत्रित एवं संचालित होते हों। आज मनुष्य में सहयोग, सहानुभूति और भ्रातृत्व का प्राय:लोप हो रहा है।

उपरोक्त बातों पर विचार करने से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इन सभी के एक साथ हल के लिए मनुष्य का दिव्यीकरण ही एकमात्र उपाय है और उसके लिए दिव्य ज्ञान की धारणा और दिव्य योग का अभ्यास आवश्यक है। इस ज्ञान से ही मनुष्य अपने कर्मों को दिव्य बनाता हुआ पवित्रता, शान्ति और शक्ति के ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार को, जिससे कि उसे सर्व प्रकार के धन एक साथ उपलब्ध हो सकते हैं, प्राप्त कर सकेगा। इससे वह रोग और शोक के बन्धनों से भी मुक्त हो सकेगा तथा सर्व प्रकार के कष्टों-क्लेशों और समस्याओं से भी मुक्ति पा सकेगा। ■■■

सफलता इससे नहीं मापी जाती है कि आपने क्या पाया है बल्कि इससे मापी जाती है कि आपने किन विरोधों का सामना किया है।

इन्टरनेट और अंतरनेट

■■■ ब्रह्माकुमारी गीता बहन, शान्तिवन

विज्ञान और टेक्नोलोजी के विकास ने 'इन्टरनेट' नामक एक ऐसा विश्वव्यापी जाल दिया है जिससे दुनिया के एक कोने में बैठे हुए हम दुनियाभर की बातों के जानकार बन सकते हैं। एक समय का अति अनजान व्यक्ति इसके माध्यम से आज अति जानकार व्यक्ति बन गया है।

जरूरत है नए आधार ढूँढ़ने की

धर्म, विज्ञान, संस्कृति, कृषि, इतिहास, राजनीति, भूगोल आदि सभी क्षेत्रों का ज्ञान हम इन्टरनेट के माध्यम से घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। हमें अनेक किताबें ढूँढ़ने की या पुस्तकालयों में जाने की जरूरत नहीं है। फिर भी इन्टरनेट की सुविधा उन साधनों और तकनीकी पर आधारित है जो प्रकृति जगत से सम्बन्धित हैं। स्वाभाविक है कि यह व्यवस्था कभी भी बिगड़ सकती है, निष्फल हो सकती है। हलचल की परिस्थितियों और अनिश्चितता के दौर से तो हम गुजर ही रहे हैं। मनुष्य ही सुविधा के साधन बनाता भी है और बिगाड़ता भी है। अब परिस्थितियाँ पहले जैसी स्थिर नहीं रही हैं। विश्व एक तीव्र गति के परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है। आवश्यकता है हमें कुछ और नए आधार ढूँढ़ने की। मन की जिस दशा से और कर्मों के जिस स्तर से हमने समस्यायें खड़ी की हैं, उसी स्तर पर हमें समाधान नहीं मिल सकते हैं।

आंतरिक क्षमता का विकास जरूरी

मानव मन, मानव बुद्धि भी तमोप्रधान बन गये हैं। इसी कारण कभी भी ये व्यवस्था चरमरा जाती है। जितने सुख के साधन बनाए जाते हैं, तमोप्रधान मनुष्य उतने ही दुख के, पीड़ा के, दर्द के रास्ते व रीतियाँ निकाल जीवन की परेशानियाँ बढ़ा रहा है। व्यक्ति जितना बाह्य साधनों पर आधारित होता जाता है उतना ही अपनी आंतरिक क्षमता गँवाता जाता है क्योंकि बाह्य साधनों से कार्य हो जाता है तो वो अपने आंतरिक विकास को महत्व नहीं देता है। स्वाभाविक है कि उसका आंतरिक स्वरूप कुण्ठित हो जाता है। साधनों का सहारा कभी भी धोखा दे सकता है। इसलिये जरूरत है अपनी नैसर्गिक क्षमताओं के विकास की। हमारा अंतर्मुखी मन ही अंतरनेट का काम कर सकता है। हमारा आंतरिक चैतन्य आत्मस्वरूप जितना शुद्ध, शांत, एकरस होगा उतना हम परिस्थितियों और व्यक्तियों के पूर्व संकेतों को झेल सकेंगे, समझ सकेंगे।

अंतरनेट की सुविधा प्रकृति ने दी है सभी को

हर व्यक्ति के अपने वायब्रेशन होते हैं। हर परिस्थिति के अपने पूर्व संकेत होते हैं। बरसात होने वाली होती है तो आकाश में बादल मंडराने लगते हैं। सुबह होने वाली होती है तो आकाश में लालिमा छाने लगती है। रात्रि होने वाली होती है तो कालिमा छाने लगती है। किसी व्यक्ति के आने पर आनंद छा जाता है और किसी के आने पर वातावरण गंभीर बन जाता है। किसी को न जानते भी अपनापन महसूस होता है और रिश्तों-नातों में बंधे हुए होने पर भी किसी से दूरी का अनुभव होता है। हर व्यक्ति का अपना आंतरिक वातावरण होता है जो वायब्रेट होता रहता है।

प्राकृतिक परिवर्तन के प्रकम्पनों को पशु-पंछी जल्दी पकड़ लेते हैं और वे वहीं से दूर जाकर अपना बचाव कर लेते हैं। लेकिन मानव का मन चूँकि मलिन है, व्यर्थ से भरा हुआ है तो वह उधेड़बुन में लगा रहता है और प्राकृतिक या व्यक्ति के संकेत को पकड़ नहीं पाता है। इस कारण बड़ी संख्या में जनहानि होती है। कुदरत ने सभी मनुष्यात्माओं को अंतरनेट की सुविधा दी है। यह

ऐसी सुविधा है, जो मानव सर्जित हलचल की परिस्थितियाँ हों या प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति, कभी भी क्षतिग्रस्त नहीं होती है।

मदद करती है शुद्ध मनोस्थिति

हमारा अंतरमन जितना साफ होगा उतना ही हम वो संकेत, प्रेरणायें स्पष्ट रूप से पकड़ सकेंगे। जैसे जलाशय का पानी यदि मैला होगा और हिल रहा होगा तो उसमें कोई भी प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई नहीं देगा, ऐसे ही, चंचल-अस्थिर मन से हम ईश्वर की प्रेरणाओं और महानात्माओं के इशारों को ग्रहण नहीं कर सकेंगे। आज जबकि संसार असुरक्षा के दौर से गुजर रहा है तो मानव संचालित, प्रकृति प्रदत्त, साधनमंडित संदेश लेन-देन की पद्धतियाँ कभी भी निष्फल हो सकती हैं। ऐसी असहाय, निराधार स्थिति में हमें स्वयं ही परखना और निर्णय करना होता है। उस समय सत्य, पवित्र, शुद्ध मनोस्थिति ही हमें मदद करती है। किसी के द्वारा दिये गये सलामती मार्गदर्शन के संकेत को भी हम इसी की मदद से पकड़ सकेंगे या दृढ़ मनोबल से दिये गये इशारे दूसरों तक पहुँचा सकेंगे।

वाइसलेस (viceless)-इगोलेस (Egoless) स्थिति

सचमुच इस सुंदर संसार में आज भी हम सर्वांगीण सुरक्षा की आंतरिक सुविधा से संपन्न हैं। हमारा जीवन उपेक्षित या दयनीय दशा का नहीं है बल्कि हमारा जीवन गौरव संपन्न और स्वनिर्भर है। जैसे प्रकृति के प्रति मन एकाग्र करने से विज्ञान का ज्ञान प्राप्त हुआ और प्राकृतिक जगत के सूक्ष्म सिद्धांतों के आधार पर वायरलेस-कॉडलेस जैसे साधनों की सुविधायें मिली, इसी प्रकार, मानव मन के आत्माभिमानी तथा परमात्माभिमानी बनने से वाइसलेस, इगोलेस की स्थिति हमें प्राप्त होती है। इससे स्वच्छ-सत्य मन-बुद्धि बनने से दूसरों के मन के भावों को स्पष्ट पढ़ सकते हैं। उनके संकल्प हमें पहुँच सकते हैं और हम भी दूर-दराज के स्थानों पर शक्तिशाली मन:स्थिति से संदेश भेज सकते हैं। जैसे अंतरिक्ष के ऊँचे स्थान पर भेजे गये उपग्रहों के माध्यम से विहंगावलोकन कर सकते हैं, तस्वीरें खींच सकते हैं और विशाल पैमाने पर संदेश पहुँचा सकते हैं, इसी प्रकार, जब हम मन-बुद्धि को दुनियावी, दैहिक, भौतिक बातों से ऊपर उठा लेते हैं और परमशक्ति के चिंतन में लगाते हैं तो उस ऊँची आत्मस्थिति की विचार तरंगों के माध्यम से ईश्वरीय संदेश, शुभभावना, योगशक्ति की तरंगें भेज सकते हैं। आत्माओं को झंकृत और जाग्रत कर सकते हैं।

सत्-असत् की परख

अंतरनेट अर्थात् हमारी आंतरिक आत्मशक्ति चूँकि मूल रूप से सत्य, शुद्ध है इसलिए दूसरों के प्रकम्पनों से हम सत्-असत्, सार-असार को भी परख पाते हैं और व्यर्थ के बहाव में न जाकर अपने आपको सुरक्षित रख सकते हैं। यह अनुभव तो हर किसी को है कि जब कभी संगदोष, वातावरण दोष में आकर गलत काम करने पर हम उतारू हो जाते हैं तब हमें अपने सत्य, शुद्ध, आत्मस्वरूप से अंत:प्रेरणा मिलती है कि हम गलत काम न करें। अंत:प्रेरणा को दबाकर हम गलत काम कर लेते हैं। उस समय अंतरात्मा की आवाज थोड़ी दब जाती है परन्तु बोलना बन्द नहीं करती है। बार-बार अन्दर से घंटी बजती रहती है।

आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग का अभ्यास हमें पावन बनाता है जिससे हमारी आंतरिक चेतना बहुत जल्दी दूसरों के भावों को परख लेती है। जरूरी है कि हम अपने मन-बुद्धि से छल-कपट के, प्रपंच के, झूठ के, अनीति के, वैर-द्वेष के खेल न खेलें। उसका सही, शुभ और श्रेष्ठ उपयोग करें। साधनों पर आधारित न हो जायें वर्ना वशीभूत होने से हम ही परेशान और परवश हो जाते हैं। हम अपनी आंतरिक अंतरनेट की सुविधा का लाभ लें। जहाँ कोई व्यक्ति और साधन का साथ नहीं होता वहाँ अंतरनेट का आधार ही हमें सही मार्गदर्शन देगा।

अंतरनेट हमें प्रभुस्नेह से जोड़ता है और इन्टरनेट के उपयोग को मायाजाल बनने से रोकता है। ■■■

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

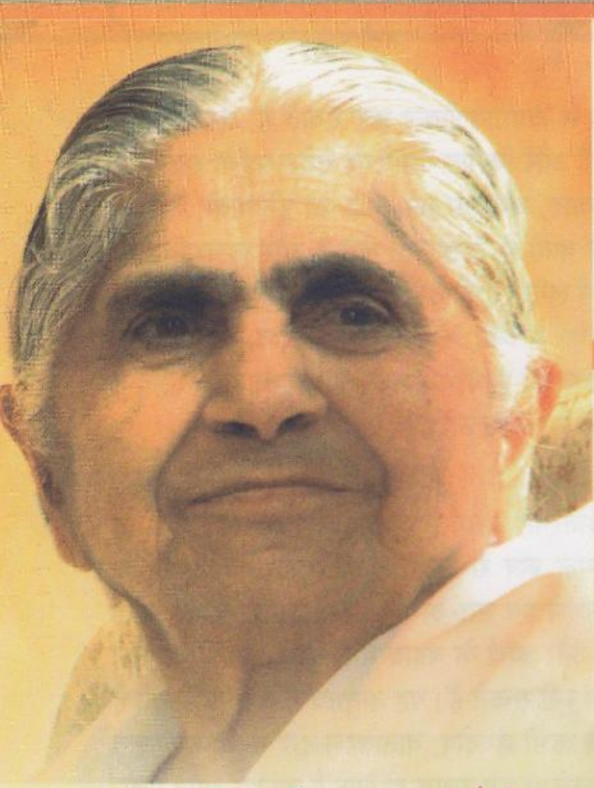

प्रश्न- बाबा के गले का हार बनना है तो क्या करें?

उत्तर- मैं कौन हूँ, यह अच्छी तरह से देखो तो नशे में 'खुशी जैसी खुराक नहीं' का अनुभव होगा। बाकी ऐसे ही कोई भी व्यर्थ चिंता करना, उससे बाबा ने सभी को फ्री कर दिया है। मैं हूँ बाबा की तो बाबा कहता है, मैं हूँ तेरा। ऐसे बाबा के साथ तेरा, मेरा करने से बाबा के गले का हार बनेंगे। ज्ञान हिण्डोले में झूलने से लौकिक बातें सब भूल गये हैं। बाबा का बनने से अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूल रहे हैं। परमात्मा बाप वन्डरफुल है, हमको क्या से क्या बनाया है! एक-एक आत्मा को देखो, सारे विश्व में ऐसी सभा कहाँ नहीं होगी। सभी ओके हैं ना! ना कोई अपनी, ना कोई अपना, हम हैं योगी लोग। हम योगी भी हैं तो सहयोगी भी हैं। खुश भी हैं, राज़ी भी हैं।

प्रश्न- नेचर में सच्चाई और प्रेम कैसे आते हैं?

उत्तर- जो निश्चयबुद्धि और निश्चिंत हैं वो ड्रामा की भावी पर बहुत शान्तचित्त रहते हैं। उनकी नेचर सच्चाई और प्रेम की बन गई है। अगर कोई पूछे, तुम्हें सुख मिला है? मेरे को तो मिला है। संगमयुग पर भगवान ने हमारे लिए रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा है। इस ज्ञान यज्ञ में निश्चिंत हो करके बैठ जाने को कहा गया है। इसलिए मैं यह गुप्त इशारा देती हूँ कि कोई को अपने या किसी के भाव-स्वभाव में नहीं आना है, ऐसा चेहरा अच्छा नहीं लगता है। भगवान जो हमको सुनाता है, उसी भावना से उसको जीवन में लाना है। इसके लिए पुरानी बातों से मुक्ति। बाबा जैसा बाप, सारे कल्प में नहीं मिलता है, यह भी ध्यान रहे क्योंकि यह बाप ऐसा है, कहता है, मैं माँ भी हूँ तो बाप भी हूँ। शिक्षक हूँ तो सखा भी हूँ और श्रीमत पर चलाने वाला सतगुरु भी हूँ। समीपता का अनुभव बाप समान बना देता है।

प्रश्न- सभी भाई-बहनों को आप क्या सन्देश देना चाहती हैं?

उत्तर- मुक्ति माना कोई बन्धन नहीं है। बन्धनमुक्त अर्थात् न्यारा। मैं सभी भाई-बहनों को कहती हूँ, इस ज्ञानमार्ग में बहुत खुश रहो क्योंकि खुश आत्मायें फरिश्ते समान दर्शनीयमूर्त लगती हैं। हम आपस में एक-दो का दर्शन करके प्रसन्न हो जाते हैं। यह शरीर मन्दिर है, इसमें हम आत्मायें और सब बातों से मुक्त हो, मूर्ति बनकर बैठी हैं तो कितना अच्छा लगता है। देह से न्यारी होने से परमात्मा का प्यार अपने आप मिलता है, मांगने से नहीं। दो आत्माएं एक जैसी नहीं हैं। कभी हम कहते हैं, फलाना या फलानी ऐसा न करें। हमारे कहने से कोई में परिवर्तन नहीं आयेगा परन्तु मैंने देखा है, भावना से परिवर्तन आता है। सभी अपना मुखड़ा देख लो अपने ही दर्पण में। मैं अच्छी हूँ, मैं अच्छी नहीं हूँ, यह चिन्तन स्व-चिंतन नहीं है। जो अच्छी-अच्छी बातें हैं वो अगर चिंतन में हैं तो

न्यारे और प्यारे हैं। संकल्प शुद्ध और शान्त हो तब कहेंगे यह सहजयोग है, राजयोग है, कर्मयोग है। कोई की आदत होती है बात को भारी करने की, ऐसा स्वभाव न हो, तभी मन से नाच सकता है माना खुश रह सकता है। मुझे खुशी है कि मैं ऐसे किसी स्वभाव-वश नहीं हूँ। बाबा कहता है, इधर-उधर नहीं देख। राजयोग बुद्धि का योग है। उसके लिए पहले अपने स्वभाव को मीठा, सहज, न्यारा-प्यारा बना लो। ऊँचा पद पाने के नशे वाला स्वभाव बनाओ।

प्रश्न- आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार और फरमानबरदार बच्चों की निशानियाँ क्या हैं?

उत्तर- अभी संगम की घड़ियाँ बहुत थोड़ी हैं, बहुत समय नहीं है। यह बात मैं एक-एक से कह रही हूँ। हरेक बाबा का बच्चा अच्छा है। हरेक बाबा का बच्चा खुशनसीब है। हरेक का पार्ट अपना है। सुख क्या चीज़ है, उसका अनुभव बाबा ने करा दिया है इसलिए दुःख की बातें भूल गई। अगर दुःख याद करेंगे तो आँखें गीली हो जायेंगी। फिर हमको रूमाल रखना पड़ता है। हमेशा ध्यान रखो कि समय थोड़ा है, जो करना है अब कर लें, कल किसने देखा। बाबा रोज़ मुरली में इशारा देता है तो मैं समझती हूँ, सभी भाई-बहनें बाबा के आज्ञाकारी होंगे। आज्ञाकारी माना जो बाबा कहे, जी बाबा। सम्बन्धों में वफादार रहें। वफादार माना अन्दर एक, बाहर दूसरा रूप न हो। ईमानदार हैं पैसे में, कभी भी बेईमानी नहीं होनी चाहिए। फिर है फरमान। जो बाबा फरमान करे, जी बाबा। तो ऐसे समझते हो कि मैं बाबा का आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार, फरमानबरदार बच्चा हूँ। वफादार, ईमानदार रहने से दिलाराम बाप के दिल में समाये हुए रहते हैं जिसकी निशानी है, सब कुछ अच्छा लगने लगेगा और हमेशा खुश, हल्के रहेंगे।

प्रश्न- दादी जी, वर्तमान समयानुसार हमारा पुरुषार्थ क्या होना चाहिए?

उत्तर- बाबा के महावाक्य सुनते-सुनते उड़ती कला आ जाती है। बाबा हमको इस धरती से ऊपर लेके जाता है। बाबा कहता है, विकर्माजीत बनो, भूल से भी अभी कोई विकर्म न हो। भूल से भी ऐसा कर्म न हो जो अपना मुँह इस सभा में दिखा न सकें। तो सभी ऐसा पुरुषार्थ कर रहे हो ना, विकर्माजीत, कर्मातीत बनने का। हम निरंतर योगी हैं तो हमारा हर कर्म योगयुक्त और युक्तियुक्त होना चाहिए। युक्तियुक्त और योगयुक्त रहने से बाबा हमको गोद में बिठाके गले लगाता है। गले लगा करके पलकों में बिठाता है। ऐसे गोद के बच्चे ही बाबा के गले का हार बनते हैं। बाबा की पलकों में रहने से हर पल, हर घड़ी बाबा याद आता है अपने आप ही। पुरुषार्थ नहीं है परन्तु परिवर्तन आ गया है कि बाबा मैं तेरी हूँ और बाबा कहता है, तू मेरी हो। बाबा ने पहले अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया है फिर बच्चे भी बाबा को अपना बनाके मुस्कराना सीखे हैं। बाबा जैसे मुस्कराने से कोई भी मुश्किलात मुश्किल नहीं लगती है।

प्रश्न- जीवन का सबसे ऊँचा धन कौन-सा है?

उत्तर- बाबा को देख अशरीरी होना सहज हो जाता है। ज्ञान ही जीवन का सबसे ऊँचा धन है। जहाँ बाबा, वहाँ सब कुछ है। जिसके दिल में बाबा है उसकी खुशी अविनाशी है। जब खुशी अविनाशी है तो विनाशी धन से खुशी नहीं है परन्तु वो धन अगर यज्ञ की सेवा में दिया, तो खुशनसीबी का अनुभव होता है। जिसे सच्ची खुशी है, उसी को बाबा अपने साथ ऊपर लेके जायेगा। तो जहाँ जाना होता है वहाँ मन होता है तब तो उसके साथ जा सकेंगे ना! इसके लिए सदा ही बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश।

संगठन में बैठे देह से न्यारा बनने की प्रैक्टिस अच्छी हो जाती है। ऐसा बिजी नहीं रहना, जो कहो कि याद में बैठने का समय नहीं है। जब बुद्धि बाबा की तरफ खिंचती है तो वायब्रेशन भी अच्छे हो जाते हैं। बाबा कहने से बुद्धि ऊपर चली जाती है। ■■■

जहाज बंदरगाह पर सर्वाधिक सुरक्षित होता है, पर जहाज बन्दरगाह के लिए नहीं बनाए जाते

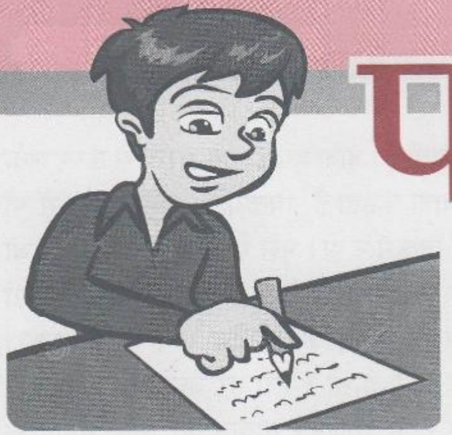

पत्र सम्पादक के नाम

मई, 2019 अंक में छपा लेख 'इतनी मेहनत किसलिए?' समाज की वर्तमान स्थिति को दर्शाते हुए, मन के मर्मस्थल पर चोट करता हुआ बुद्धिजीवी मनुष्य को सोचने पर विवश करता है कि शान्ति और सुकून को अनदेखा कर उसकी अंधाधुंध दौड़ आखिर उसे कहाँ ले जाकर छोड़ेगी? भौतिक सुख-सुविधाओं को बढ़ाने की चाह में उसे बहुत कुछ ऐसा भी मिल रहा है जो वह बिल्कुल नहीं चाहता। खीझ, आक्रोश, झल्लाहट, थकान और तनाव से ग्रस्त होकर जब वह कार्यस्थल से घर लौटता है तो अपने आपको इतना सहज नहीं पाता कि परिवार के सदस्य, जो उसका बेसब्री से इन्तजार कर रहे हैं, के साथ हँस-बोल सके। जिन्दगी को, जिसके अगले पल का भरोसा नहीं, व्यक्ति बोझ बनाकर ढो रहा है। बच्चों की आल्हादपूर्ण किलकारियाँ, पक्षियों के कलरव, फूलों की मुस्कराहट, पत्तों की सरसराहट से उपजे संगीत, नदी की कल-कल, चाँदनी की शीतलता आदि नैसर्गिक छटा से व्यक्ति कोई खुशी नहीं ले पा रहा है। जीवन को सहज-संतुलित बनाने का तरीका विद्वान लेखिका ने उपरोक्त सुन्दर लेख में बड़े अच्छे ढंग से व्यक्त किया है। ऐसे-ऐसे मनभावन लेखों से सजी आध्यात्मिक पत्रिका 'ज्ञानामृत' अनेक भटके हुए लोगों को सही राह दिखाने का सराहनीय कार्य कर रही है। इसी अंक में ब्रह्माकुमार सूर्य भाई द्वारा रचित लेख 'योगयुक्त या योगमुक्त जीवन?' योगमार्ग के पथिकों के लिए ध्येय में सफलता प्राप्ति के लिए अति प्रेरणादायी है। ज्ञानामृत पत्रिका के सम्पादक मण्डल तथा सभी सहयोगियों को कोटि-कोटि नमन।

ब्र.कु. के.एल.छाबड़ा, रुड़की (उत्तराखण्ड)

एक पुरानी ज्ञानामृत में एक कहानी थी, महाज्ञादान कौन? इसमें बताया गया है कि हीरे को न पहचानने वाला धोबी तो केवल नादान है पर पहचान कर भी सिर्फ आठ आने के लिए कंजूसी कर लाखों रुपए जिसने गंवाये वह है महानादान। ऐसे ही जिन्होंने बाबा को पहचाना ही नहीं, वे तो नादान हैं पर पहचान कर भी अपनी कमी-कमजोरी छोड़ने के लिए जो कंजूसी कर रहे हैं, वे हैं महानादान। इस वाक्य ने आँखें खोल दीं जैसे कि बिजली लग गई। दोपहर को सोने की तैयारी कर रहा था लेकिन नींद ही फिट गई । जाकर योग में बैठ गया । एक कटु सत्य महसूस कराया । लेखक को बहुत-बहुत धन्यवाद ।

ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लान्ट, शान्तिवन

सितम्बर, 2019 का सम्पादकीय लेख 'सच्ची आस्तिकता' बहुत ही सारगर्भित है। पढ़ लेने के बाद चिन्तन करने को विवश करता है। ज्ञानामृत में प्रकाशित 'प्रश्न हमारे उत्तर दादी जी के' जीवन को उन्नत बनाने में मार्गदर्शन करते हैं। इस अंक में प्रकाशित 'सही कीमत का टैग', 'आनन्दमय जीवन के सूत्र' काफी अच्छे थे। पत्रिका ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर है। लगातार पत्रिका को पढ़कर ज्यादा से ज्यादा ज्ञान हासिल कर रहा हूँ। पत्रिका दिन दोगुनी, रात चौगुनी उन्नति करे।

आचार्य डॉ.सुभाष पुरीरौही, सम्पादक, 'धारीवाल दर्पण' मासिक, धारीवाल (पंजाब)

'ज्ञानामृत' के जुलाई अंक में सम्पादकीय 'गुणों की गहराई' बहुत ही सुन्दर ढंग से लिखा गया है। 'एक स्वच्छता यह भी', 'सुख-शान्ति का आधार राजयोग' आदि लेखों को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। 'ज्ञानामृत' का इन्तजार करता रहता हूँ।

ब्र.कु.सोवरन सिंह, बेला, औरैया (उ.प्र.)

हिम्मत

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

हिम्मत शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – हिम + मत। हिम का अर्थ है बर्फ और मत का अर्थ है विचार। जिसकी विचारधारा में हिम जैसी दृढ़ता, अडिगता, अचलता हो उसे कहते हैं हिम्मत का धनी। मार्ग में बाधाएँ तो आनी हैं फिर भी कुछ कर गुजरने का जज्बा, चुनौतियों को भी चुनौती देने का संकल्प, बाधाओं को कुचलकर आगे बढ़ने का साहस – इसे हिम्मत कहा जाता है।

हिम्मत के बोल

हर व्यक्ति में हिम्मत होती है परन्तु कईयों की सुषुप्त अवस्था में चली जाती है। जब उस सोई हुई हिम्मत को पहचान नहीं पाते, उसे कार्य में लगा नहीं पाते तब मन में विचार आने लगते हैं कि पता नहीं कार्य होगा या नहीं होगा, पता नहीं परिस्थितियों के बादल छँटेंगे या नहीं छँटेंगे। भगवान कहते हैं कि यह गे-गे की भाषा बाल अवस्था की भाषा है। छोटा बच्चा ' गे-गे ' करता है परन्तु परिपक्व अवस्था वाले की भाषा में 'गे' के बजाय 'है' होता है। वह कहेगा, बादल छँटने ही हैं, विघ्न हटने ही हैं, कार्य होना ही है। मुझे करना ही है और कार्य हुआ ही पड़ा है – ये हैं हिम्मत के बोल।

मकड़ी का उद्यम बना उत्प्रेरक

सोई हुई हिम्मत को जागृत करने में कई बार कोई घटना, दृश्य या संस्मरण भी उत्प्रेरक बन जाता है। युद्ध में पराजित, निराश, हताश एक राजा के लिए एक छोटी-सी मकड़ी का उद्यम ही उत्प्रेरक बन गया। उदास राजा ने देखा कि दीवार पर चढ़ने के प्रयास में एक मकड़ी कई बार गिरी परन्तु उसने चढ़ने का प्रयास जारी रखा। आखिर में वह सफल हुई। इसे देख उदास राजा की आँखों में चमक आ गई और मन में साहस तथा आत्म-विश्वास का संचार हो गया। इसी साहस के बल पर वह अपने अभियान में विजयी हो गया।

सामने की बात पर नहीं, अपने बल पर केन्द्रित हो जाओ

एक बार जागने के बाद भी हिम्मत पुनः डाँवाँडोल हो जाती है। किसी विरोध को या प्रतिकूल लोगों को देखकर हिम्मत टूटने और बिखरने लगती है। ऐसे में लगने लगता है कि सामने वाली बात बहुत बड़ी है और मुझमें तो इसका सामना करने की शक्ति नहीं है। ऐसा इसलिए होता है कि हम सामने आई बात के बारे में सोच-सोच कर उसको तो ऊर्जावान बना देते हैं और अपने को ऊर्जाहीन बना लेते हैं। होना यह चाहिए कि हम अपने बल पर पूर्ण एकाग्र होकर, अपने लक्ष्य पर केन्द्रित हो जाएँ, इससे हम ऊर्जावान हो जाएंगे और हर बड़ी बात छोटी होकर हमारा स्वागत करेगी तथा हमें मार्ग दे देगी।

सोचा और किया, इसमें है आनन्द

कार्य को करने के बजाय सोचते ही जाना, टालते जाना, भविष्य पर छोड़ देना – ये सब हिम्मतहीनता के लक्षण हैं। संकल्प उठा और कर दिखाया, इसका अपना एक आन्तरिक आनन्द होता है। ताजा भोजन खाने में और बासी भोजन खाने में जो अन्तर है वही अन्तर तुरन्त करने में और सोच-सोच कर करने में है। ताजे भोजन में स्वाद और पौष्टिकता दोनों होते हैं, उसी प्रकार, सोचते ही कर लेने में हल्कापन, खुशी, स्वतंत्रता और आन्तरिक आनन्द जैसे कई सुन्दर अनुभव समाये रहते हैं। ऐसे व्यक्ति का आत्म-बल, आत्म-विश्वास भी चरम पर पहुँच जाता है। उसका संकल्प होता है, सबकुछ सम्भव है।

प्रतीक्षा, बहाना और आलस्य

हिम्मतवान किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करते कि यह सहयोगी बने, यह अनुकूल हो, ये हालात बदलें। वे तो दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं कि चाहे जान चली जाये पर प्रतिज्ञा नहीं जा सकती। जब जान की ही बाजी लगा दी तो इससे बड़ी बाजी तो कोई होती नहीं। इस बाजी का अर्थ है, कैसी भी परिस्थितियाँ हों पर हिम्मत को हिला नहीं सकती। हम हार खा नहीं सकते, विजय का हार पहनेंगे। पीछे हट नहीं सकते बल्कि पीछे वालों को भी आगे ले आयेंगे। प्रतिज्ञावान प्रतीक्षा नहीं करते और न ही बहानेबाजी करते हैं। बहाने करने वालों के बोल होते हैं, ऐसे नहीं था, ऐसे था, ऐसा नहीं होता तो ऐसे हो जाता, वैसे नहीं होता तो वैसे हो जाता, इसने ऐसा कर दिया, परिस्थिति ऐसी आ गई, बात ही ऐसी थी, उसने वैसा कर दिया आदि-आदि। 'ऐसा-वैसा' यह भाषा बहानेबाजी की है और 'लक्ष्य जैसा' यह भाषा हिम्मत और दृढ़ता की है। हिम्मतवान यह नहीं सोचता कि दूसरों को मुझे बनाना है, वह सोचता है, मुझे बनना है। दूसरे ऐसा करें तो मैं बनूँ, सहयोग दें तो मैं आगे बढ़ूँ, नहीं। उसकी धारणा होती है, स्व को देखना, स्व को बदलना और स्व के मान में रहना।

हिम्मत में कमी आने का एक अन्य कारण है आलस्य और लापरवाही, जिसके शब्द हैं–यह तो होता ही है, चलता ही है, हो जायेगा, देख लेना, मेरे पर विश्वास करो आदि-आदि। बड़े-बड़े भी ऐसे करते हैं, हम तो हैं ही छोटे, यह है स्व को देखने की नजर की कमजोरी और पर को देखने की नजर की तेजी। ऐसी नजर हिम्मतहीन कर देती है।

80/20 का फार्मूला

कोई भी व्यक्ति, समाज, संगठन या देश हिम्मत के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। कई बार सरकारें ऐसी योजनाएँ बनाती हैं जिनमें जन-सहभागिता अनिवार्य होती है। मान लीजिये, किसी गाँव में तालाब बनाने का बजट 20 लाख रुपये है। सरकारी आदेश आता है कि 20 प्रतिशत धन ग्रामवासी एकत्रित करेंगे और 80 प्रतिशत धन सरकार देगी। यदि सभी ग्रामवासी हिम्मत का कदम उठाकर 20 प्रतिशत एकत्रित करेंगे तो ही सरकारी सहयोग मिलेगा और गाँव का विकास होगा अन्यथा सरकार से मिलने वाले 80 प्रतिशत धन को भी वे खो देंगे। कई ग्रामवासी एकजुट होकर यह कर दिखाते हैं और कई एकजुटता की हिम्मत नहीं दिखा पाते इसलिए पिछड़ जाते हैं।

यही फार्मूला हम पर भी लागू होता है। हिम्मत के 20 नहीं मात्र एक कदम बढ़ाने से ईश्वरीय मदद के 80 नहीं, 100 के 100 कदम मदद के मिल जाते हैं। यदि एक कदम नहीं बढ़ाएंगे तो प्रभु के 100 कदमों की मदद ना मिलने का नुकसान भी हम ही उठाएंगे।

हिम्मते मर्दा, मददे खुदा

भगवान भी उसकी मदद करते हैं जो हिम्मतवान बनता है। जो हिम्मत ही हार गया, वह मदद को ले कैसे सकेगा? मदद को स्वीकार करने के लिए भी पहले हिम्मत करनी पड़ती है। जब हम ईश्वरीय मार्ग पर पाँव रखते हैं तो हिम्मत से दृढ़ संकल्प करते हैं कि हमें इस गन्दी, पुरानी, विकृतियों से भरी तमोगुणी दुनिया में पवित्र रहना है। यह संकल्प ऐसा ही है जैसे धारा के विपरीत तैरने का संकल्प करना। धारा की दिशा में तो मुर्दा भी बह जाता है परन्तु उसके विपरीत चलना मानो धारा की प्रचण्ड शक्ति को चुनौती देना है। बने बनाये रास्तों पर चलना सहज होता है परन्तु पवित्रता के नये मार्ग का निर्माण करना, इसमें आन्तरिक बल की आवश्यकता होती है।

आप सबने वो कहानी सुनी होगी कि एक बार जंगल में आग लग गई। सभी पशु, प्राणी, पंछी भयभीत होकर जंगल छोड़कर भागने लगे। उन्हीं के बीच एक छोटी चिड़िया भी थी जो जंगल से भागने के बजाए आग बुझाने का उपाय सोचने लगी। समाधान भरी इस सोच के साथ वह जंगल के जलाशय से अपनी चोंच में पानी भर-भर कर आग पर डालने लगी। उसे यह कार्य करते देख एक कव्वे ने कहा, आपकी चोंच के बूँद भर पानी से क्या यह

आग बुझ जाएगी? चिड़िया ने कहा, कव्वे भैया, आप भी मेरे साथ लग जाओ, हमारे संयुक्त प्रयास से आग कुछ अधिक बुझेगी। परन्तु कव्वा यह कहते हुए दूर उड़ गया कि इस असम्भव कार्य में हाथ डालकर क्यों समय बरबाद करूँ। तभी एक लोमड़ी भी चिड़िया को मेहनत करते देखकर पूछने लगी, आपके इस प्रयास से क्या आग बुझेगी? चिड़िया ने कहा, आप भी लग जाओ, दोनों मिलकर करेंगे तो अवश्य कार्य जल्दी हो जाएगा। लोमड़ी भी यह कहकर जंगल छोड़कर भाग गई कि जब सब भाग गए तो मुझे क्या पड़ी है आग बुझाने की, मैं तो अपनी सुरक्षा खोजूँ। चिड़िया अपने काम में लगी रही। तभी वहाँ से हाथियों का एक झुण्ड गुजरा। हाथी के एक छोटे बच्चे ने चिड़िया को अति व्यस्त देखकर पूछा, चिड़िया रानी, क्या कर रही हो? उसने कहा, जंगल में आग लगी है, आप भी चलो आग बुझाने में मदद करो। हाथी का बच्चा चल पड़ा जलाशय की ओर तथा अपनी सूंड में पानी भर कर आग पर डालने लगा। बाकी हाथी अपने एक साथी को न पाकर उसे ढूँढ़ने लगे। जब देखा कि वह अकेला आग बुझाने में लगा है तो बाकी सभी हाथी भी अपनी-अपनी सूंड में पानी भरकर आग बुझाने में लग गए। इस प्रकार चिड़िया की हिम्मत और हाथियों की एकता से देखते ही देखते आग बुझ गई। कहानी हमें बताती है कि अच्छे कार्य में आप हिम्मत से लग जाओ। भगवान आपकी मदद के लिए हजारों सहयोगी बना देंगे और आप अवश्य सफल हो जाएँगे।

हिम्मत का कदम बढ़ाते ही परमात्मा पिता से आन्तरिक बल, ज्ञान का बल, ईश्वरीय बल मिलना प्रारम्भ हो जाता है कि ''बच्चे, आप आदि-अनादि पवित्र आत्मा हैं, आपने यह संकल्प पहली बार नहीं किया, आप अनेकों बार कीचड़ में कमल बनी हैं और बनती रहेंगी। मन्दिरों में आपके ही परम पवित्र रूप की पूजा हो रही है और भक्त आपके जड़ चित्रों से पवित्रता का बल माँगते हैं। आपकी पवित्रता की वे महिमा गाते हैं। पवित्रता की निशानी के रूप में आप पूज्य आत्मा के सिर पर लाइट का ताज है। बच्चे, माया का काम है आना और आपका काम है विजय प्राप्त करना। आपकी हिम्मत और बाप की मदद से असम्भव सम्भव होना ही है।''

साहस और दुस्साहस

कई बार व्यक्ति में हिम्मत तो होती है परन्तु उस हिम्मत को सही दिशा न मिलने से वह दुस्साहस में बदल जाती है। दुस्साहस अर्थात् ताकत का दुरुपयोग। एक स्काउट ने अपने साथ बीती एक घटना सुनाई कि वह अपने दोस्तों के साथ एक मॉल में गया। दोस्तों ने तय किया कि अपनी बहादुरी साबित करने के लिए वे मॉल से कुछ चुराएंगे। उन्होंने इस स्काउट से पूछा कि तुम क्या चुराओगे? इसने जवाब दिया, कुछ नहीं, मैं यह नहीं करूँगा। एक लड़के ने पूछा, क्या बात है, क्या तुम्हें डर है कि तुम पकड़े जाओगे? स्काउट ने कहा, मैं डरपोक नहीं हूँ परन्तु दुस्साहस के वश कोई काम नहीं करना चाहता। यह कहकर यह स्काउट अलग चल पड़ा। तुरत ही, अन्य लड़के भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े क्योंकि उन्होंने भी यह निर्णय लिया कि दुस्साहसी बनने के बजाय न करना बेहतर है।

भगवान शिव कहते हैं, ''कई बच्चे मदद के पात्र होते भी मदद से वंचित क्यों रह जाते हैं? हिम्मत की विधि भूलने के कारण। अभिमान अर्थात् अलबेलापन और स्व के ऊपर अटेन्शन की कमी के कारण। विधि नहीं तो वरदान से वंचित बन जाते। जैसे तालाब का पानी खड़ा हुआ होता है, ऐसे पुरुषार्थ के बीच में खड़े हो जाते हैं, इसलिए कभी मेहनत, कभी मौज में रहते। आज देखो तो बड़ी मौज में हैं और कल छोटे से रोड़े के कारण उसको हटाने की मेहनत में लगे हुए हैं। अगर कोई उन्हें कहता है कि यह तो बहुत छोटा कंकड़ है तो हँसी की बात क्या कहते, आपको क्या पता, आपके आगे आये तो पता पड़े। भगवान को भी कहते हैं, आप तो हो ही निराकार, आपको भी क्या पता। लेकिन इसका कारण है छोटी-सी भूल। हिम्मते बच्चे, मददे खुदा इस राज को भूल जाते हैं। मदद का सागर होते हुए भी भगवान ने यह विधान की विधि रखी है कि जितना चाहो हिम्मत रखो और मदद लो।'' ■■■

सावधान!
मित्र रूप में शत्रुओं को पहचानो

ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लान्ट, शान्तिवन

शत्रु को उसी रूप में पहचानना आसान है पर मित्र का रूप धारण कर आने वाले शत्रु से सावधान रहना अति कठिन है। इसलिए ही जासूसों को सैनिकों से भी ज्यादा खतरनाक माना जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे शत्रुओं को पहचानना और उनके आक्रमण से जागृत रहना, यह तो हम जानते ही हैं परन्तु मित्र रूप में माया के दो अन्य प्रतिनिधि दिनभर हमारे अंग-संग रहते हैं, जरूरत नाम की दवा पिलाकर हमारे मन-बुद्धि को अपने वश में कर लेते हैं। इन शत्रुओं को अगर हम नहीं पहचानेंगे तो समय पर धोखा खाना निश्चित है। पहला शत्रु है वाट्सएप (Wattsapp) और दूसरा है फेसबुक (Face book)

क्या ये भी विकार हैं?

ये दोनों विकार तो नहीं हैं परन्तु विकारों के मात-पिता हैं। जैसे मात-पिता अपने बच्चों को तंदुरुस्त रखते हैं, उनकी दीर्घ आयु चाहते हैं वैसे ही वाट्सएप और फेसबुक हमारे अंदर के विकारों को सदा जागृत और तंदुरुस्त रखते हैं, कभी भी उनका विनाश नहीं होने देते हैं।

आध्यात्मिक किले में भी घुसे हैं शत्रु

शत्रु, सबसे पहले कुछ प्रलोभन दिखाकर हाथ से हथियार छुड़ाता है, वैसे ही, साधन नाम का प्रलोभन दिखाकर साधना रूपी महाअस्त्र छीन लिया है। फिर भी परखने में समय इसलिए लग रहा है क्योंकि हम उनको मित्र समझ बैठे हैं। ज्ञान-योग, संगठन, नियम-धारणा-सेवा आदि जैसी मजबूत दीवारें होते हुए भी मनोरंजन नाम के एक छोटे-से सुराख से ये अंदर घुस गए हैं।

समय के खजाने की बेहद लूट

साधक की सबसे अमूल्य संपत्ति है समय। जीवन जीने के लिए श्वास जैसे जरूरी है वैसे ही साधना करने के लिए समय सख्त जरूरी है। अवस्था को श्रेष्ठ रखने हेतु, कार्यक्षेत्र में दिनभर व्यस्त रहते हुए साधक को समय निकाल कर साधना करनी पड़ती है, एक-एक सेकेण्ड को जमा करना होता है। लेकिन, ये मित्र रूपी शत्रु, शिवपिता को याद करने के लिए बचाकर रखे समय को बीच-बीच में लूट कर साधक को अपनी तरफ खींच लेते हैं। इससे साधना खंडित होकर आत्मिक शक्ति क्षीण होती जाती है।

बुद्धि पर अत्याचार

जैसे योद्धा का साधन तलवार है वैसे ही आध्यात्मिक साधक की तलवार है बुद्धि। तलवार को धार लगायी जाती है, वैसे ही बुद्धि को भी ज्ञान के मंथन और शिवपिता की याद की विधि से सालिम बनाया जाता है। इसलिए ज्ञान-योग को खुराक भी कहा जाता है। लेकिन, वाट्सएप और फेसबुक में अधिकतर व्यर्थ बातों का ही संग्रह होता है अर्थात् ये कूड़ेदान हैं। कूड़ेदान में पड़ी वस्तु को खुराक नहीं बल्कि बासी कहा जाता है जिसको खाने से बीमार हो जाते हैं। बुद्धि, जो भगवान से मिला हुआ वरदान है, उसको ताजी खुराक के बजाय बासी खिलाकर कमजोर बनाना, यह बुद्धि के साथ अत्याचार है।

अंतर्मुखता की गुफा से उठाकर बहिर्मुखता के भंवर में फेंक दिया

साधक अर्थात् एकांतवासी। ऋषि-मुनि आदि तपस्या करने के लिए घर-बार छोड़ जंगलों में, गुफाओं में बैठ जाते थे ताकि एकाग्रता भंग न हो। वही एकांतवास सबके साथ रहते हुए भी निर्माण हो, उस के लिए शिवपिता ने अंतर्मुखी बनने की युक्ति बतायी है। अंतर्मुखता अर्थात् स्व चिंतन और स्व परिवर्तन में अपने मन-बुद्धि को व्यस्त रखना और सदा मंजिल की स्मृति में रहना। अंतर्मुखता ही

एक उपाय है जिससे शिवपिता के साथ अटूट संबंध जुट सकता है। लेकिन, वाट्सएप और फेसबुक मिलकर साधक को उस गुफा से उठा लाते हैं और बहिर्मुखता के भंवर में फेंक देते हैं जहाँ न साधना है, न ही कोई मंजिल।

मुख्य फरमान का निरंतर उल्लंघन

भगवान शिवपिता, ज्ञान, गुण और शक्तियों के सागर हैं। पुरुषार्थ कर उन के समान बनना ही ईश्वरीय पढ़ाई का लक्ष्य है। परन्तु, समान तब बन सकते हैं जब हम देह और देह की दुनिया को भूल, स्वयं को आत्मा समझ, परमात्मा शिवपिता को निरंतर याद करने में सफल होंगे। किसी भी कार्य को निरंतर करने के लिए कठिन अभ्यास चाहिए। चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, काम-काज करते हुए बार-बार मन-बुद्धि से इस अभ्यास को जारी रखेंगे तब याद स्थाई बन सकती है। लेकिन, वाट्सएप और फेसबुक के आकर्षण-वश, बार-बार जेब से मोबाइल निकाल कर देह की दुनिया से संबंधित फोटो, विडियो देखना, व्यर्थ बातें पढ़ना, उनको फैलाना, इन नकारात्मक बातों के अभ्यास में ही लगे रहेंगे तो भगवान के मुख्य फरमान का अभ्यास कब करेंगे?

सही जगह इस्तेमाल करें

बहुत सारी दवाइयों में अल्कोहल नाम का एक रासायनिक मिश्रित किया जाता है ताकि दवाई जल्दी खराब न हो। दवाई की आड़ लेकर यदि कोई अल्कोहल को पीने लगेगा तो अपनी आँतों को ही जला डालेगा। हरेक वस्तु को इस्तेमाल करने का एक उद्देश्य और एक सीमा रहती है। उस उद्देश्य के लिए और उस सीमा के अंदर ही वह वस्तु सुविधा का काम करेगी। उद्देश्य के अतिरिक्त और सीमा के बाहर वह जरूर सुविधा नहीं बल्कि समस्या बनेगी। वैसे ही वाट्सएप या फेसबुक, समाचारों को शीघ्रगति से पहुंचाने के लिए बने साधन हैं, न कि मनोरंजन या नकारात्मक बातों के लिए। इन चीजों का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल साधक को पुरुषार्थहीन बना देता है।

क्या यह मनोरंजन है?

साधना द्वारा अवगुणों को मिटाना, दैवी गुणों को प्रकट करना, शिवपिता के साथ सर्व संबंधों का रस लेना, अतींद्रिय सुख का अनुभव करना, औरों को शिवपिता का परिचय देकर उनसे आशीर्वाद का बल लेना, सद्भावना का वायुमण्डल बनाना, ये सारे एक आध्यात्मिक साधक के मनोरंजन हैं। प्रापंचिक समाचार, चुटकुले, समाज के किसी एक वर्ग की अवहेलना करने वाले जोक्स फैलाना, असत्य समाचारों को पढ़ कर आपस में चर्चा करते रहना, क्या यह मनोरंजन है? आध्यात्मिक वर्ग, जो अन्य सर्व वर्गों से श्रेष्ठ माना जाता है, उस वर्ग का सदस्य अगर निम्न स्तर की बातों से आनंद लेता है तो वह मनोरंजन नहीं बल्कि मानसिक विकृति मानी जाती है।

दिल पर हाथ रखकर सोचिए

सच्चे दिल से सोचिए कि ये दोनों चीजें मेरे लिए कितनी उपयोगी हैं। दिन में कुल मिलाकर कितना समय मैंने इनको इस्तेमाल किया और उसमें से कितने प्रतिशत मुझे लाभ मिला। जब हिसाब निकालेंगे तो हमें बहुत ही आश्चर्यजनक बात यह पता चलेगी कि केवल 1-2 प्रतिशत ही उपयोगी था और 98 प्रतिशत पूर्णत: समय, संकल्प और श्वास की बरबादी थी।

अंत मति सो गति

शरीर छोड़ते वक्त आत्मा जो संकल्प करती है, जिसे याद करती है, उसकी गुणवत्ता के आधार पर आत्मा को पुनर्जन्म मिलता है। इस प्रक्रिया को शिवपिता कहते हैं, अंत मति सो गति। अंतिम श्वास में शिवपिता की स्मृति में रहने से हम ऐसी जगह पर जन्म लेंगे जहाँ सुख, शान्ति और संपत्ति भरपूर होगी। इसलिए हम खुश हो कर बोल देते हैं कि अंत के एक-दो मिनिट के लिए शिवपिता को याद करना तो बहुत आसान है, क्या बड़ी बात है?

वास्तविकता बहुत कठोर है

शरीर छोड़ने के कुछ समय पहले आत्मा सुषुप्त अवस्था में जाने के कारण पांचों कर्मेंद्रियों और तीनों ज्ञानेंद्रियों पर से अपना नियंत्रण खो देती है अर्थात् अपनी इच्छा से न कुछ सोच सकती है, न ही कुछ कर सकती है।

तब संस्कार अपनी भूमिका निभाना शुरू कर देते हैं अर्थात् अपनी शक्ति से मन और बुद्धि को चलाना शुरू कर देते हैं। नींद में चलना, बेहोश अवस्था में बड़बड़ाना, ये सारे संस्कारों के खेल हैं, जब वे आत्मा के नियंत्रण से स्वतंत्र हो जाते हैं। लेकिन संस्कार, मन-बुद्धि से वही काम करवाते हैं जो बहुत समय से आत्मा ने किए होंगे। इसलिए शिवपिता बार-बार यही इशारा देते हैं कि बहुत काल का अभ्यास अंत में मदद करेगा। कदम-कदम पर शिवपिता को याद करने का अभ्यास हम करते हैं तो अंत में भी वही होगा। अगर बार-बार वाट्सएप-फेसबुक को याद करते हैं तो अंत में निश्चित ही बुद्धि भी वही चीज याद करेगी, जिससे एक सेकेण्ड के इम्तिहान में हम नापास हो जाएँगे।

मूल्यों की विस्मृति और संगठन में दरार

आध्यात्मिक साधक अर्थात् इस धरती पर भगवान का प्रतिनिधि। उसकी दृष्टि में पूरी दुनिया एक ही परिवार है जहाँ भ्रातृत्व और सद्भावना के सिवाय अन्य कोई भाव नहीं। जात, धर्म, भाषा, ऊँच-नीच, ये भावनाएँ संकल्प-स्वप्न मात्र में भी उसको स्पर्श नहीं कर सकतीं। लेकिन वाट्सएप और फेसबुक में अधिकतर भ्रातृत्व की पवित्र भावनाओं का नाश करने वाले, भेद-भाव, हिंसा को प्रोत्साहन देने वाले भाव भरे रहते हैं। उनको पढ़कर, कई बार साधक अपने मूल्यों से विचलित हो जाता है। कभी-कभी जाने-अनजाने उन अयथार्थ बातों को अपना समर्थन भी दे देता है। अन्य लोगों द्वारा उसे पढ़ने से आध्यात्मिक संगठन में दरार पड़ सकती है और साधक एवं साधना के बारे में लोग अपना विश्वास खो सकते हैं।

अत: वाट्सएप और फेसबुक के मोहिनी रूप के पीछे छिपे विकराल रूप को पहचानो। ये दोनों, साधना को रोकने वाली अदृश्य दीवारें हैं जो सामने रहते हुए भी, दिखते हुए भी दिखती नहीं हैं। केवल विवेक रूपी नेत्र से ही इनकी भयानकता को महसूस किया जा सकता है।

जैसे टेलीग्राम, फैक्स, ईमेल आदि को मात्र सेवा-संपर्क के लिए इस्तेमाल करते हैं, वैसे ही इनको भी केवल सेवा के साधन के रूप तक ही सीमित रखें। मनोरंजन करना, व्यक्तिगत संबंध बढ़ाना, हिंसा और भेद-भाव को बढ़ावा देना, इन बातों को संपूर्ण विदाई दें और आध्यात्मिक साधना को तीव्र कर शिवपिता जैसे चाहते हैं वैसे अपने जीवन को ढालें।

अकल्याण में भी कल्याण

आध्यात्मिक साधकों की एक आम फरियाद यह है कि सेवाक्षेत्र में व्यस्त रहने से बीच-बीच में समय निकाल कर भगवान को याद करना कठिन है। पर देखने में आता है कि कार्य व्यवहार में बेहद व्यस्त रहते हुए भी कई बार जेब से मोबाइल बाहर निकलता है और मन, बुद्धि, आंखें, हाथ इकट्ठे उसमें एकाग्र हो जाते हैं। तो समय नहीं मिलता, इस भ्रम से मोबाइल ने हमें बाहर निकाला और यह सिद्ध किया कि कमी समय की नहीं बल्कि रुचि की है। अत: याद की यात्रा में रुचि बढ़ानी है और कदम-कदम पर सोशल मीडिया में एकाग्र होने वाले मन-बुद्धि को याद की यात्रा में एकाग्र करना है। ■■■

शीघ्र आवश्यकता

सरोज लालजी महरोत्रा ग्लोबल नर्सिंग एवं ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान में दो बी.के.किचन असिस्टेंट एवं एक कुक (पुरुष, हिंदी जानने वाले) की आवश्यकता है।

योग्यता: किचन असिस्टेंट के लिए : 12वीं पास एवं दो वर्ष का भोजन बनाने का अनुभव

कुक के लिए : 12वीं पास एवं दो वर्ष का भोजन एवं मिठाई बनाने का अनुभव।

संपर्क करें :

मोबाइल नं. : 94141413717

ई-मेल : nntagrawal@gmail.com

किसान सशक्तिकरण - जैविक-यौगिक खेती द्वारा

■■■ ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

एक बार सम्राट विक्रमादित्य अपने मंत्री और सेनापति के साथ रथ से कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक स्थान पर धान के कुछ दाने बिखरे हुए थे। सम्राट ने सारथी से कहा कि यहां कुछ हीरे बिखरे हुए हैं अत: तुम रथ रोको। इस पर मंत्री ने कहा कि 'महाराज, आपको शायद भ्रम हुआ है, भूमि पर तो धान के दाने पड़े हैं जिन्हें आप हीरे समझ रहे हैं।' परन्तु विक्रमादित्य रुके नहीं और नीचे उतर कर उन दानों को उठा कर माथे से लगाया और मंत्री से बोले कि 'मंत्रीजी, आपको शायद असली हीरों की पहचान नहीं है। ये वे हीरे हैं जिनसे सबका पेट भरता है। अन्न को हमारे ऋषि-मुनियों ने अन्नदेव कह कर सम्मान दिया है अत: अन्न के प्रत्येक दाने का आदर होना चाहिए।' मंत्री को कुछ ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि स्वयं अन्नपूर्णा देवी सम्राट के सामने खड़ी होकर उन्हें आशीर्वाद दे रही हैं। यही कारण था कि सम्राट विक्रमादित्य के राज्य में अन्न के अक्षय भण्डार हुआ करते थे। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि अन्न का प्रत्येक दाना ऐसा बीज भी है जिसके अन्दर एक पौधा छिपा हुआ है। जब गेहूँ के दाने, आटा बनाने के लिए पीसे जाते हैं और उस आटे की रोटी बनती है, तो रोटी का हर कौर गेहूँ के अनेक पौधों का अर्क होता है। उसमें किसान के श्रम की शक्ति भी समाई हुई होती है।

उदारता और सद्भावना की मिसाल

महात्मा गांधी के दादा का नाम उत्तम गांधी था, जिन्हें लोग सम्मान से 'ओता गांधी' कह कर पुकारते थे। वह पोरबंदर के राजा खिमजी के दीवान थे। ओता गांधी के दो बेटे थे, जिनका विवाह उन्होंने धूमधाम से किया। विवाह के भोज में पूरे गांव को निमंत्रित किया गया था। गरीब-अमीर व हर जाति के लोगों को बुलाया गया था। बारात की अगवानी स्वयं राजा खिमजी ने की थी। चूँकि ओता गांधी अपनी सरलता, मिलनसारिता व ईमानदारी के कारण सर्वत्र लोकप्रिय थे अत: उनके बेटों की शादी में मेहमान भी खूब आए और साथ में सौगातें भी खूब लाए। विवाह के बाद जब खर्चे व उपहारों से हुई आमदनी का हिसाब लगाया गया, तो आमदनी खर्चे से काफी ज्यादा मिली। इस अतिरिक्त रकम को ओता गांधी ने कबूल करना स्वीकार नहीं किया और इसे राजा को यह कहते हुए समर्पित किया कि आपके राज्य की जनता से ही यह धन उपहार में प्राप्त हुआ है अत: इसे आप राज्य-खजाने में जमा करा लें। राजा ने कहा कि यह रकम तो जनता ने आपको दी है, इस पर केवल आपका हक है अत: इसे राज्य के खजाने में जमा नहीं किया जा सकता। ओता गांधी ने कहा कि इस समय सूखा (अकाल) पड़ा हुआ है और किसान परेशान हैं अत: आप इस धन को अभावग्रस्त किसानों में बंटवाने का कष्ट करें। राजा ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया। यह उदारता व सद्भावना की एक मिसाल है। किसानों के प्रति सद्भावना महात्मा गांधी को अपने दादा से विरासत में मिली थी। कानून भी है कि दादा लाई जायदाद से पोते को कोई बेदखल नहीं कर सकता। यह स्थूल जायदाद ही नहीं बल्कि सूक्ष्म संस्कारों पर भी लागू होता है। अभी शिवबाबा की 'जीवनमुक्ति' की जायदाद सभी के लिए उपलब्ध है परन्तु रावण की जायदाद (विकार) भुगत रहे (न कि भोग रहे) और माया के आगोश में मूर्छित पड़े मनुष्यों को यह भी नहीं पता कि जीवनमुक्ति है क्या? अभी भाग्यशाली ब्रह्माकुमार-कुमारियां ओता गांधी की तरह अपना अतिरिक्त धन शिवबाबा को इस सद्भावना के साथ समर्पित कर रहे हैं कि इसे सर्वत्र फैले सद्गुणों के अकाल

को दूर करने और त्राहि-त्राहि कर रहे मनुष्यों को 21 जन्मों का जीयदान देने की सेवा में लगाया जाए। इससे बड़ा पुण्यकर्म कोई हो नहीं सकता।

आत्महत्याओं के बढ़ते मामले

भारत में सन् 1990 से किसानों की आत्महत्या के मामले उजागर होने शुरू हुए। शुरूआत में देश भर में प्रतिवर्ष लगभग 10,000 किसान आत्महत्या कर रहे थे। ''द हिन्दू'' अखबार के संवाददाता पी. साईंनाथ ने सन् 1990 में सर्वप्रथम किसानों की आत्महत्याओं की खबर छापी थी। अधिकतर आत्महत्याएँ महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के कपास उत्पादक किसानों ने की थीं जिनमें छोटी-जोत, मध्यम-जोत व बड़ी-जोत वाले तीनों प्रकार के किसान शामिल थे। कारण था विदेशी कंपनियों के द्वारा थोपे गए 'आनुवंशिक-परिवर्तित' (Genetically Modified) बीज जिनसे उपजी फसल में से किसान अगले साल के लिए बीज नहीं बचा सकते क्योंकि वे बांझ (Sterile) होते हैं। किसान को तो मजबूरी-वश 'आनुवंशिक-परिवर्तित' बीज ही ऊंचे मूल्य पर विदेशी कम्पनियों से खरीदने होते हैं। इनसे उगे पौधों में कीट-पतंगे बहुत ज्यादा लगते हैं जिसके लिए किसान को कीटनाशक भी विदेशी कम्पनियों से ऊंची कीमतों पर खरीदने होते हैं। कर्नाटक, केरल, आंध्रप्रदेश, पंजाब, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ के किसानों में भी आत्महत्या करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। केवल सन् 2009 में ही 17,368 किसानों ने आत्महत्याएँ की थीं। यह दिल दहलाने वाली खबर है कि पिछले दो दशकों में लगभग 3,00,000 किसानों ने आत्महत्या की है। कपास की खेती करता हुआ किसान, अपने ही कपास का कफन ओढ़ कर, अपने ही खेत की माटी में एकाकार हो रहा है।

आत्महत्याओं का विश्लेषण

आत्महत्याओं का विश्लेषण मनोरोग विशेषज्ञ डा. मिलिन्द पोटदार ने किया है। उनके अनुसार, 'वैश्विकरण के कारण किसान उच्च जीवन की तरफ आकर्षित होता है मगर उस अनुरूप उसकी आर्थिक स्थिति होती नहीं, जो उसमें तनाव उत्पन्न करती है। संयुक्त परिवार में नए साधन को क्रय करने की शक्ति हो सकती थी, जो कि वर्तमान का एकल-परिवार (Nuclear Family) वहन नहीं कर सकता है, यह अक्सर आत्महत्या का कारण बनता है। महाराष्ट्र में सन् 2014 व 2015 में सूखा पड़ा जिससे किसानों की आमदनी उनके खर्चे से कम रही, जो आत्महत्याओं का कारण बनी। डा. पोटदार के अनुसार, सन् 1970 में इससे भी भयानक सूखा पड़ा था परन्तु आत्महत्याओं का ऐसा दौर तब नहीं देखा गया था। सन् 2015 में 40 प्रतिशत आत्महत्याओं के मामले भारी कर्ज के कारण हुए थे। आत्महत्या करने वाले 72 प्रतिशत किसान 2 हेक्टेयर से कम भूमि वाले थे।

दवा के साथ बीज-वितरण

बढ़ती बीमारियों का मुख्य कारण है अन्न, फल, सब्जियां आदि उगाने में कीटनाशक व रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग। चिकित्सकों की यह आम राय है कि किडनी, दिल के रोग, रक्चचाप की अनियमितता, कैंसर आदि में हो रही भीषण वृद्धि का मुख्य कारण कीटनाशक व रायायनिक खाद आदि का प्रयोग है। देश में जैविक खेती द्वारा कुछ व्यक्तियों ने जो नए प्रयोग किए हैं, यहां उनकी चर्चा किसानों (पाठकों) के लिए प्रेरणादायक हो सकती है। अलीगढ़ के सर्जन डा. सुदर्शन तोमर मर्ज की दवा के साथ सेहतमंद अनाज भी बांटते हैं ताकि मरीज ठीक होने के बाद फिर बीमार न पड़े। वे जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए बीमार किसानों को जैविक बीज के पैकेट बांटते हैं। वे अब तक सैकड़ों मरीजों और हजारों किसानों को दो-दो किलो अनाज के बीज मुफ्त बांट चुके हैं जिन्हें उन्होंने अपने 30 बीघे के फार्म में जैविक खेती के माध्यम से तैयार कराया है। सन् 2017 तक वे 1500 किसानों को गेहूँ, मटर, मसूर, अरहर, चना, तिल आदि के बीज बाँट चुके थे। डा. तोमर की ख्याति दूर-दूर तक फैलती जा रही है और लोग फोन करके उनके जैविक बीजों हेतु एडवान्स बुकिंग करा रहे हैं।

ई-मार्केटिंग से बिचौलियों से बचाव

सौराष्ट्र के जूनागढ़ जिले के रसिक भाई दोंगा जैविक खेती करते हैं और शिक्षित होने के कारण आधुनिक सूचना तकनीक का उपयोग कर अपनी फसल ऊंचे दामों पर अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों को बेच रहे हैं जिससे उनकी आमदनी तीन गुनी हो गई है। सोशल मीडिया के द्वारा उनकी फसल पकने से पहले ही बिक जाती है। उन्होंने अमेरिकन स्टैंडर्ड प्रमाणपत्र हासिल किया हुआ है। यदि दूसरे किसान भी ई-मार्केटिंग की तकनीक सीख लें और जैविक खेती करके उसे उपभोक्ताओं को सीधे-सीधे बेच दें, तो वे बिचौलियों के शोषण से बच सकते हैं। रसिक भाई दोंगा ने कृषि विशेषज्ञ सुभाष पालेकर की गाय आधारित जीरो बजट खेती अपनाकर आर्गेनिक सब्जियों व गेहूँ का उत्पादन शुरू किया था और अब गुजरात सरकार के किसान कल्याण मेले में कृषि राज्यमंत्री से सर्वश्रेष्ठ किसान का पुरस्कार पाया है। देश में जैविक खेती से कामयाबी हासिल करने वाले अन्य बहुत से किसान हैं और उनमें कॉमन बात यह पाई गई है कि वे अशिक्षित नहीं हैं। तो यह आवश्यक है कि किसान कम से कम हाईस्कूल पास जरूर हो और कर्ज के जाल में फँसा हुआ नहीं हो। कर्ज से उपजे मानसिक उत्पीड़न से बचने के लिए राजयोग मेडिटेशन सहायक है जिसका नि:शुल्क ज्ञान किसी भी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से प्राप्त किया जा सकता है।

वर्मी कम्पोस्ट

पटियाला (पंजाब) के प्रगतिशील किसान गुरप्रीत सिंह शेरगिल ने जैविक कृषि को अपने जिले के हर गाँव तक पहुँचा दिया है। जैविक खाद के अलावा शेरगिल वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ-खाद) पिछले 10 साल से तैयार व इस्तेमाल कर रहे हैं। वे सालाना 1000 क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट अन्य किसानों को मुहैया करा रहे हैं। सरकार वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन पर 50 प्रतिशत सब्सिडी दे रही है। पर्यावरण प्रेमी शेरगिल ने सन् 1996 से फूलों की खेती भी शुरू की थी। जैविक व समेकित कृषि की उनकी उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें कृषि-मंत्री के द्वारा इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट फेलो फार्मर अवार्ड और सन् 2015 में इनोवेटिव फार्मर अवार्ड दिया गया था। सन् 2014 में उन्हें प्रधान-मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के हाथों एन.जी. रंगा फार्मर अवार्ड दिया गया था।

जैविक खेती की ओर बढ़ते कदम

सिक्किम पहला राज्य है जहां शत-प्रतिशत जैविक खेती का लक्ष्य पूरा हुआ था। अब मिजोरम व अरुणाचल प्रदेश भी सिक्किम जैसी सफलता के लिए प्रयासरत हैं। हिमाचल प्रदेश में भी जैविक खेती का प्रसार तेजी से हो रहा है। वहां सलोगड़ा पंचायत के मनसार गांव (सोलन) के अमरचंद शर्मा ने सन् 2007 से जैविक खेती शुरू की। भूमि को रासायनिक प्रभाव से मुक्त होने में तीन साल लग गए और उन्हें नुकसान उठाना पड़ा परन्तु चौथे साल से अच्छा मुनाफा मिलने लगा। दिल्ली की एक कम्पनी रोजाना मंडी के उच्चतम भाव के बराबर का भुगतान करके उनकी सारी सब्जियां ले जाती है। अमरचंद की सफलता से प्रेरित होकर शिमला, सोलन व सिरमौर जिले के 2500 किसान जैविक खेती से जुड़ चुके हैं और हिमाचल प्रदेश तेजी से सिक्किम की तरह 100 प्रतिशत जैविक खेती वाला राज्य बनने की तरफ बढ़ रहा है। अमरचंद को सन् 2016 में हिमाचल कृषि विभाग से बेस्ट फार्मर अवार्ड मिल चुका है। वह अब दूसरे किसानों का मार्गदर्शन करते रहते हैं।

टपक विधि से सिंचाई

प्रभात कुमार ने एन.आई.टी. पश्चिम बंगाल से इंजीनियरिंग करने के बाद गुजरात में पी.एस.यू. से नौकरी शुरू की। वहां उसे खेती-बाड़ी के नए-नए तरीके देखने का मौका मिला तो नौकरी छोड़ कर टपक विधि (Drip Irrigation) से सब्जियों की खेती अपने घर की छत पर शुरू की। वह बैंगन, कद्दू, भिंडी, पपीता, अमरूद, केला, अनार आदि के पौधे थर्मोकॉल के बक्से में मिट्टी डालकर उगाता है और जैविक खाद का उपयोग करता है। सभी बॉक्स में पानी की पाइपें लगी हुई हैं जिससे टपक विधि से दस मिनट में सारे पौधों की सिंचाई

हो जाती है। पाइप में ऑटोमेटिक टाइमर लगा है जो उसके मोबाइल से नियंत्रित होता है। कहीं भी रहते मोबाइल से सिंचाई शुरू की जाती है और फिर बंद भी मोबाइल से ही की जाती है। यह कोडर-डिकोडर सिस्टम से जुड़ा हुआ है। प्रभात को बिहार सरकार ने सम्मानित किया है। प्रभात ने 'एक्स फाउंडेशन' नाम की एक संस्था बनाई है जो जिले के 27 गाँवों में टपक विधि से आधुनिक खेती करा रही है। प्रभात शहद उत्पादन करते हैं जिसमें सहजन से भी शहद तैयार किया जाता है। इस शहद का स्थानीय भाव 600 रुपये प्रति किलो है परन्तु अमेरिका को 15000 रुपये प्रति किलो की दर से निर्यात किया जा रहा है।

वर्तमान समय किसानों के द्वारा शराब का सेवन एक देशव्यापी समस्या बन गया है। इस कारण बड़ी संख्या में किसान अकाले मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। परन्तु यह ध्यान देने की बात है कि जो किसान जैविक खेती कर रहे हैं, वे शराब व अन्य नशों से दूर हैं। जहरीली खेती करने वाले किसानों में ही नशा-वृत्ति फैली हुई है हालाँकि अपवाद हो सकते हैं। यदि इस गंभीर समस्या से किसानों को बचाना है तो उन्हें जैविक खेती करने को प्रेरित करना होगा। जहरीली खेती अर्थात् माया व विकारों का शिकंजा, जैविक खेती अर्थात् प्रकृति के सहयोगी बन कर अपनी आत्मिक दिव्यता को बढ़ाना, एक स्वस्थ व खुशहाल जीवन जीना। यह देखने में आ रहा है कि जहरीली खेती के जंजाल से मुक्त होने में या तो जैविक खेती कर रहे किसान प्रेरणा-स्रोत बन रहे हैं या फिर गांवों में ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के द्वारा चलाए जा रहे सेवा कार्य से, एक खुशहाल जीवन अपनाने की आत्मिक शक्ति किसान पा रहे हैं। उनका जहरीला जीवन ईश्वरीय अनुकम्पा पाकर जैविक व आत्मिक जीवन को अपना रहा है। इस संबंध में ब्रह्माकुमारी संस्था के 'खेती तथा ग्राम विकास प्रभाग' द्वारा किये जा रहे प्रयास अब फलदाई होते दिख रहे हैं। जैविक के साथ-साथ यौगिक खेती अपना चमत्कारिक प्रभाव दिखा रही है। भारत के अनेक स्थानों पर यौगिक खेती के सफल प्रयोग हुए हैं। इन्हें देखते हुए सरकार यौगिक खेती करने वाले किसानों को आर्थिक मदद के तौर पर तीन वर्ष में 48 हजार रुपये की अनुदान राशि प्रदान करेगी।■■■

भगवान धरा पर आये हैं

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला शर्मा, गुरुदासपुर, पंजाब

जिसको पाने की खातिर तूने क्या-क्या कष्ट उठाये हैं!
नजरें तो उठा कर देख जरा, भगवान धरा पर आये हैं।।

है देव-तुल्य जीवन तेरा, क्यों विषयों में गँवाया है?
इक पल तू रुक कर देख जरा क्या खोया, क्या पाया है?
अधिकार तू अपना पाने को दर-दर धक्के खाये हैं।
हे मानव आँखें खोल जरा, भगवान धरा पर आये हैं।।

क्यों नीच-पापी कहलाता है, तू तो सद्‌गुणों की खान है।
उस परमपिता को भी अपने प्यारे बच्चों पर मान है।
उसके साये में तूने जीवन के सब सुख पाये हैं।
हे मानव आँखें खोल जरा, भगवान धरा पर आये हैं।।

क्यों मोह की नींद में सोया है, तज आलस आँखें खोल जरा।
इस रावण रूपी माया से, अब अपना नाता तोड़ जरा।
इन पाँच विकारों ने तुझको देख क्या-क्या नाच नचाये हैं।
हे मानव आँखें खोल जरा, भगवान धरा पर आये हैं।।

भारत को स्वर्ग बनाना है, हम सबका अब यह नारा है।
हम परमपिता के बच्चे हैं, यह सारा विश्व हमारा है।
सुख, शान्ति, प्रेम और सतयुग का वर्सा वो देने आये हैं।
हे मानव आँखें खोल जरा, भगवान धरा पर आये हैं।।

ऑस्ट्रेलिया वालों के जीवन में आस है, विश्वास है

■■■ ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

प्राण बापदादा की सेवा के निमित्त जुलाई-अगस्त 2019 में मेरा आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, पापुआ, न्यू गिनी, ताइवान, सिंगापुर आदि देशों की सेवा पर जाने का कार्यक्रम बना। इसके लिए आदरणीया दादी जानकी जी और दीदी डॉ.निर्मला जी को हृदय से धन्यवाद देना चाहूँगा, उनकी शुभकामनाएँ सदैव मेरे साथ रहीं। ये देश भारत भूमि से दूर हैं लेकिन वहाँ के लोगों में परमात्म मिलन और ईश्वरीय प्राप्ति की आस है। मैंने उनमें आशा की किरण देखी एवं उनका आत्मविश्वास देखते ही बनता है।

पंच देशों की यात्रा के दौरान विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, मंत्रालयों, कॉलेजों, क्लबों, एनजीओ में कार्यक्रम आयोजित किये गए जिनमें विद्यार्थियों, कर्मचारियों, अधिकारियों, वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं, पेशेवरों आदि ने भाग लिया। सभी कार्यक्रमों में प्रश्नोत्तर हुए एवं योग अभ्यास भी कराया गया जिनमें प्रतिभागियों को बहुत अच्छी अनुभूतियाँ हुई। अलग-अलग सेवाकेन्द्रों पर ब्राह्मण परिवार हेतु स्वउन्नति के क्लासेज भी हुए। ज्ञानामृत के सुधी पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं कुछेक चुने हुए प्रश्न और उनके उत्तर।

प्रश्न- एक युवा ने पूछा, जीवन में अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा हूँ, इससे निकलने का कोई उपाय बताएँ?

उत्तर- अनिश्चितता का एक प्रमुख कारण यह है कि हम बहुत सोचते रहते हैं, कहीं ऐसा ना हो जाए, कहीं वैसा ना हो जाए और सचमुच बुरा सोचने से तो बुरा ही होगा। पता नहीं कहने से तो पत्ता ही कट जाएगा। 'मैं यह परीक्षा पास नहीं कर सकता हूँ' जब ऐसा नकारात्मक चिंतन कर लिया तो फिर परीक्षा में फेल तो होना ही है।

पापुआ न्यू गिनी (पोर्ट मोरेस्बी)- ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के बाद भारत के उच्चायुक्त भ्राता विजय कुमार के साथ ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.जागीर भाई तथा ब्र.कु.करेन बहन।

सर्वप्रथम प्रातः उठकर अपने संकल्पों को नई दिशा दीजिए, अपने मन को नई ऊर्जा से भर दीजिए, कुछ नया करने का संकल्प करिए तो आपके जीवन से अनिश्चितता का दौर समाप्त हो जायेगा और सफलता सहचरी बन जायेगी।

प्रश्न- एक गृहस्थी ने पूछा कि नियमित ध्यान-साधना से कैसे आपसी सम्बन्धों को बेहतर बनाया जा सकता है?

उत्तर- सम्बन्धों में कड़वाहट का कारण दूसरों में दोष देखना एवं संवादहीनता है। राजयोग का अभ्यास करने से हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन आ जाता है, हम गुणग्राही बन जाते हैं। हम आत्माएँ एक पिता की संतान हैं, आपस में भाई-भाई हैं एवं एक ही परिवार के सदस्य हैं। एक-दूसरे के गुणों को देखने, मृदुभाषी बनने और संवाद बनाये रखने से सम्बन्धों में समरसता बनी रहती है। हम एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। ज्ञान हमें दूसरों को देना सिखाता है इसलिए भारत में कहावत है कि देवता अर्थात् देने वाला। जब हम स्वयं को दाता के बच्चे समझ, सभी को कुछ न कुछ देते हैं तो हमारे सम्बन्ध प्रगाढ़ हो जाते हैं।

प्रश्न- एक युवती ने पूछा कि असफलता का सामना कैसे किया जाए?

उत्तर- सफलता और असफलता जीवन के दो पहलू हैं। सदैव किसी को सफलता नहीं मिलती और हमेशा ही कोई नाकामयाब होता रहे, यह भी नहीं हो सकता है। अब्राहम लिंकन ने कहा है कि मेरा बड़प्पन इसमें नहीं कि मैं कभी गिरा नहीं अपितु इसमें है कि हर बार गिरकर, ऊँचा उठ गया। भाव यही है कि हमें हर असफलता से शिक्षा लेनी है, कोई भूल एक बार हो जाए तो उसे बार-बार दोहराना नहीं है। जीवन में या तो जीत मिलती है या सीख मिलती है। सीखते चलें, आगे बढ़ते चलें, यही जिंदगी जीने का सही तरीका है।

प्रश्न- एक अधिकारी ने पूछा कि हर परिस्थिति में मुस्कराना कैसे सीखें?

उत्तर- एक शोध के अनुसार, एक छोटा बच्चा दिन में लगभग 400 बार मुस्कराता है। हम जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, हमारी प्रसन्नता कम होती जाती है। हमारा चेहरा लटक जाता है, चिंताएँ घेर लेती हैं। परिस्थितियाँ पराई हैं और स्थिति मेरी है। समस्याओं के बीच रहकर मुस्कराना ही तो कला है। परीक्षा माना प्रभु इच्छा अर्थात् परमात्मा मुझे परीक्षाओं से गुजार कर दृढ़ निश्चयी और योग्य-सुयोग्य बनाना चाहते हैं, मेरा आत्मविश्वास बढ़ाना चाहते हैं। जितनी बड़ी परिस्थिति उतनी ही बड़ी प्राप्ति। कहने में भी आता है –

वो पथ क्या, पथिक सफलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हों,
नाविक की धैर्य कुशलता क्या,
जब धाराएँ प्रतिकूल न हों।

प्रतिकूल को अपने अनुकूल बना लेने से मुस्कराहट आती है। 'मुस्कराहट के बिना मुख खिलता नहीं, सत्य ज्ञान के बिना सुख मिलता नहीं।' चेहरे की सच्ची सुंदरता मुस्कराहट है।

प्रश्न- एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने पूछा कि मैं कुछ समय बाद सेवानिवृत्त होने वाला हूँ। मेरे मन में बार-बार सामाजिक पहचान खो जाने का भय आता है, कोई हल बताएँ?

उत्तर- इस भय के समाधान के लिए हमें 'मैं' और 'मेरा' के अंतर को समझने की आश्यकता है। एक दिन में मैं बहुत सारे पार्ट बजाता हूँ लेकिन पार्ट बजाने वाला यह 'मैं' आत्मा है। हमें रोल कॉन्सियस नहीं अपितु सोल कॉन्सियस बनना है। जब हम स्वयं को किसी विशेष भूमिका से जोड़ लेते हैं तो उसके खोने का डर हमें सताता रहता है। सेवानिवृत्ति जीवन में एक अवस्था परिवर्तन है। बहुत सारे लोग सेवानिवृत्ति के बाद भी सक्रिय बने रहते हैं, बहुत सारी संस्थाओं से जुड़ कर अपनी विशेषताओं का लाभ दूसरों तक पहुँचाते रहते हैं। इसलिए आप बिलकुल भी निराश न हों, स्वयं को जनहित के कार्यों में व्यस्त रखने की योजनाएँ बना लें, इससे भविष्य का भय अवश्य मन से निकल जायेगा।

प्रश्न- एक बुजुर्ग बाबूजी ने पूछा कि नई पीढ़ी के साथ सामन्जस्य आज बहुत बड़ी चुनौती बन गया है, कोई हल बताएँ?

उत्तर- स्वयं को अपडेट करते रहना, आस-पास के परिवेश से सीखते रहना और अपने जीवन को नवीनता से भरपूर रखना ही जीवन जीने की कला है। सबसे ज्यादा आवश्यकता इस बात की है कि हम युवाओं के साथ बैठें, उनके साथ विचारों का आदान-प्रदान करते रहें। अपने अनुभव से युवा पीढ़ी को सिखाएँ। साथ ही हम भी उनसे सीखते रहें। अपने युवा काल का संस्मरण भी उनके साथ साझा करें ताकि युवाओं को आपको सुनने की जिज्ञासा हो। युवा आपके जीवन की सफलता की कहानियाँ सुनने में अवश्य रुचि लेंगे। इसके साथ ही नैतिक मूल्य उन्हें कहानी के रूप में अपने जीवन से जोड़कर सुनायें तो युवा पीढ़ी के साथ तालमेल बिठाना सहज हो जायेगा। आज का युवा प्रवचन सुनने में विश्वास नहीं रखता। उसे किसी आदर्श व्यक्ति की तलाश रहती है। जब आप उनके लिए प्रेरणा स्रोत बन जायेंगे तो पीढ़ी का अंतर (जनरेशन गैप) समाप्त हो जायेगा और आप युवाओं के साथ मित्रवत् भूमिका में आ जायेंगे।

प्रश्न- एक युवा ने पूछा कि मेरा बाहरी व्यक्तित्व बहुत आकर्षक है लेकिन मैं अपने आंतरिक व्यक्तित्व को भी प्रभावशाली बनाना चाहता हूँ, कृपया कोई विधि बताएँ?

उत्तर- चुम्बकीय व्यक्तित्व बनाने के लिए जीवन में मूल्यों को धारण करने और कमियों को निकालने की आवश्यकता है। कहने में भी आता है कि मूल्यों के बिना मनुष्य का कोई मूल्य नहीं होता। मूल्यों का ज्ञान होना एक बात है जबकि मूल्यों को धारण करना दूसरी बात है। इसके लिए आवश्यकता है आध्यात्मिक शक्ति की। ज्ञान से हमें युक्ति मिलती है और योग से हमें शक्ति प्राप्त होती है। युक्ति और शक्ति का संयोग होने से मूल्यों की धारणा होती है। शक्ति प्राप्त करने के लिए राजयोग का अभ्यास करना अनिवार्य है।

प्रश्न- मैं जब भी किसी से मिलता हूँ, मुझे उसमें कमियाँ ही नजर आती हैं, इसे कैसे परिवर्तन करूँ?

उत्तर- देह को देखने से, बाहरी स्वरूप को देखने से कमियाँ दिखती हैं। इसके विपरीत, आत्मिक स्वरूप को देखने से गुण दिखते हैं। हम जिनसे भी मिलें, उनके मस्तक में चमकती हुई मणि आत्मा को देखें। कमी मुझे कमाई नहीं करने देती है। खुद की कमी हमारी उन्नति में बाधा डालती है और दूसरों की कमी देखने से नकारात्मक चिंतन चलता है जिससे आत्मा कमजोर होती रहती है। अगर मैं हरेक की कमियाँ ही देखता रहूँगा तो मेरी बुद्धि किचड़े का डिब्बा बन जायेगी। सामने वाला व्यक्ति जिस चीज को निकाल फेंकना चाहता है, मैं उसे ग्रहण कर रहा हूँ, क्या इसे बुद्धिमानी कहेंगे? इससे मुक्त बनने के लिए मुझे मधुमक्खी से सीखना होगा कि जैसे वह हर फूल से मधु ही लेती है, ऐसे ही आज से मैं हर आत्मा रूपी रूहे गुलाब से मधु अर्थात् गुण एवं विशेषताएँ ग्रहण करता रहूँ। इसके लिए मुझे दूसरों की विशेषताएँ देखने का चश्मा पहनाना है। महान व्यक्ति वही कहलाता है जो सबकी महानता-विशेषता को ही देखता है।

प्रश्न- मेरी सास मुझे बहुत तंग करती है, सारे दिन ताने मारती रहती है और खूब काम कराती है जबकि अपनी लड़की (मेरी ननद) को एक शब्द भी नहीं बोलती है। मैं अपने जीवन से तंग आ गई हूँ, कोई उपाय बताएँ?

उत्तर- सब्र और सहनशीलता कोई कमजोरी नहीं होती हैं। ये वो ताकत हैं जो सबमें नहीं होती हैं। इसलिए ही कहा जाता है कि सहना आत्मा का सच्चा गहना है। जो सहन करता है वही शहंशाह बनता है। जितनी जो महान विभूति होती है उसमें उतनी ही ज्यादा सहनशक्ति होती है। मुझे यह समझना पड़ेगा कि सहन करना मेरी कमजोरी नहीं अपितु मेरी ताकत है। कर्मों का विधान प्रत्येक आत्मा के साथ चल रहा है। मेरा अवश्य ही कोई पुराना हिसाब-किताब उस आत्मा के साथ है इसलिए ही तो वह मेरी सास के रूप में मुझे मिली है। अब मेरे सामने दो विकल्प हैं। 1.मैं तंग-दुखी होकर सहन करूँ तो कर्मों का मेरा नया हिसाब बन जाएगा फलस्वरूप दिनोंदिन जीवन में दुख बढ़ता जायेगा। 2.मैं खुशी-खुशी यह सोचकर सहन करूँ कि मेरा विकर्मों का बोझ हल्का हो रहा है, कोई पूर्व जन्म का हिसाब सैटल हो रहा है। इससे दिनोंदिन मेरी खुशी बढ़ती जायेगी, परिणामस्वरूप, सास के साथ सम्बन्ध भी मधुर हो जायेंगे।

प्रश्न- एक कर्मचारी ने पूछा कि ऑफिस में जाते ही टेबल पर फाइलों का ढेर देख तनाव हो जाता है, सारे दिन फाइलों पर काम करते-करते थक कर चूर हो जाता हूँ, तनाव से मुक्ति का कोई उपाय बताएँ?

उत्तर- कार्यालय जाने पर काम आरम्भ करने से पूर्व आप पाँच मिनट मन को शांत करने के लिए योग अभ्यास करें। दिन में भी थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद योग अभ्यास करते रहें।

ऐसा करने से मन ऊर्जा से भरपूर हो जायेगा। फलस्वरूप मन की कार्यक्षमता, कार्यकुशलता और कार्यदक्षता बढ़ जायेगी। आप चाहें तो काम को प्राथमिकता के आधार पर करना आरम्भ करें। इसके लिए आप कार्य को तीन भागों में बाँट लें – अति आवश्यक, आवश्यक और सामान्य। सबसे पहले जो फाइलें अति आवश्यक हैं उन्हें निपटायें। इसके बाद दूसरी फाइलों को लें। अब आप कम समय में बिना थके ज्यादा कार्य कर सकेंगे। वास्तविकता यह है कि थकावट की शुरूआत मन से होती है फिर तन थकता है। यह विधि अपनाने से तनाव दूर हो जायेगा, थकावट महसूस नहीं होगी और जीवन में आनंद की अनुभूति होगी।

प्रश्न- एक वयोवृद्ध व्यक्ति ने पूछा कि जब मैं किसी युवती को देखता हूँ तो मेरे मन में बहुत उल्टे-सुल्टे विचार आने लगते हैं? इससे मुक्त होने का कोई उपाय बताएँ?

उत्तर- आजकल फैशन के जमाने में दैहिक प्रदर्शन का बोलबाला है। लोग देहभान में जैसे कि पूरी तरह से डूबे हुए हैं। अखबार पढ़ें, टी.वी.देखें, व्हाट्सएप देखें, इंटरनेट पर जायें – हर जगह विकारों और विकृतियों का ही प्रदर्शन हो रहा है। लोगों ने इन सबको मनोरंजन का साधन और जीवन का हिस्सा मान लिया है। इनसे मुक्ति के लिए आत्मिक अभ्यास बढ़ाने की आवश्यकता है। हम सब एक पिता परमात्मा की संतान आत्माएँ आपस में भाई-भाई हैं। भौतिक शास्त्र के सिद्धात के अनुसार विजातीय ध्रुव एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं और सजातीय ध्रुव एक-दूसरे से दूर हटते हैं। ठीक इसी प्रकार जब हम एक-दूसरे को आत्मा-आत्मा भाई-भाई देखते हैं तो आकर्षण समाप्त हो जाता है। आत्मिक स्थिति को बढ़ाने से उल्टे-सुल्टे विचारों से मुक्ति संभव है।

प्रश्न- एक महिला ने पूछा कि मैं अकेली घर में रहती हूँ, मुझे सदैव किसी न किसी प्रकार का भय सताता रहता है, इससे मुक्ति की युक्ति बताएँ?

उत्तर- किसी भी प्रकार का भय हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को खराब करता है। एक वैज्ञानिक ने दो बकरियों पर प्रयोग किया। दोनों बकरियों को अलग-अलग स्थान पर रखा, दोनों को बढ़िया भोजन-पानी दिया। एक बकरी के सामने बहुत सुंदर बगीचा था जबकि दूसरी बकरी के सामने बगीचे में, पिंजड़े में शेर को रखा। पहली बकरी दिनों-दिन तंदुरूस्त होती गई लेकिन दूसरी बकरी को भय रहता था कि शेर मुझे कभी भी खा जायेगा इस कारण वह दिनोंदिन कमजोर होती गई। इससे सिद्ध होता है कि भय कैसे हमारे मन और तन को बुरी तरह प्रभावित करता है। भय से मुक्ति के लिए कभी भी स्वयं को अकेले न समझें। राजयोग के अभ्यास के द्वारा सदा सर्वशक्तिवान परमात्मा का साथ अनुभव करें। कहावत भी है कि जाको राखे साईयाँ मार सके न कोई......। जिसका रक्षक स्वयं भगवान है उसका कोई बाल बाँका भी नहीं कर सकता है। ■■■

नकद प्यार है...

■■■ ब्रह्माकुमार मदन वर्मा 'फलक', कन्नौज (उ.प्र.)

नकद प्यार है शिवबाबा का, जग का सभी उधार रे।
ना मानो तो पाकर देखो, हो जाओ भव पार रे।।

दिखने में सीधा-सा है पर सबसे बड़ा जुआरी है।
दाँव लगाता पल-पल पर ये कहता, अबकी बारी है।।
जीत-जीत के ही चक्कर में, सब कुछ जाता हार रे।
नकद प्यार है शिवबाबा का...................

भले प्यास की तड़प में भइया, छाँव मिल गयी तो भी क्या।
उछरत-डूबत भव सागर में, नाव मिल गई तो भी क्या।।
नहीं बैठने का शऊर तो, कैसे उतरे पार रे।
नकद प्यार है शिवबाबा का...................

महलों की या कुटिया की, रखते नहीं विचार हैं।
चाक पे माटी सबकी नाचे, बाबा कुशल कुम्हार हैं।।
एक हाथ से थप्पी मारें, दे दूजा आकार रे।
नकद प्यार है शिवबाबा का...................

यही लालसा कैसे पहुँचूं, दाता के समकक्ष मैं।
चाहे जितना सज-धज जाऊँ, नहीं वो भरते वक्ष में।।
आलिंगन से पहले ही वो, सब कुछ लेंइ उतार रे।
नकद प्यार है शिवबाबा का, जग का सभी उधार रे।
ना मानो तो पाकर देखो, हो जाओ भव पार रे।।

राजयोग की उपलब्धियाँ

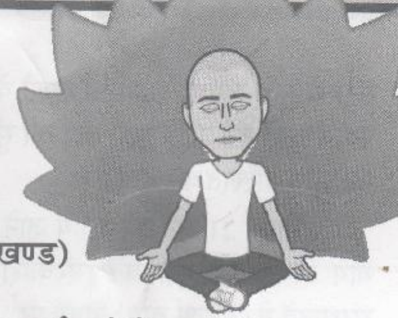

■■■ ब्रह्माकुमारी अक्षिमा त्यागी, रुड़की(उत्तराखण्ड)

मैं कक्षा दस में पढ़ने वाली एक कुमारी हूँ। मैंने जब से एल.के.जी. में पढ़ना शुरू किया था लगभग तभी से अपने माता-पिता के साथ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा में आध्यात्मिक पढ़ाई के लिए भी जाना शुरू कर दिया था। मुझे छोटेपन से ही शिवबाबा (सर्व मनुष्यात्माओं के रूहानी परमपिता) के प्रति एक सहज और अनोखा आकर्षण है। जैसे-जैसे मेरी आयु बढ़ती गई, ज्ञान और योग के प्रति मेरी समझ भी बढ़ने लगी। जो सेवाकेन्द्र पर सुनती थी, बाद में सभी के बीच बहुत कुछ रिपीट करने लग गयी। मेरी ग्रहण क्षमता को देखकर सभी भाई-बहनों को आश्चर्य होता था।

आध्यात्मिक शिक्षा का प्रभाव

उपरोक्त अलौकिक शिक्षा का प्रभाव मेरी लौकिक स्कूली शिक्षा पर भी पड़े बिना नहीं रह सका। मेरी याददाश्त और एकाग्रता इतनी अच्छी हो गयी कि एक बार सुना-पढ़ा मेरे दिमाग पर छप जाता जिसका असर मेरे स्कूल की परीक्षाओं के परीक्षा-फल में स्पष्ट दिखाई देता। स्कूल में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं जैसे कला, खेल-कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद आदि में भी भाग लेती चली आ रही हूँ और मुझे हर वर्ष कोई न कोई पुरस्कार, मोमेंटो, सर्टिफिकेट, ट्राफी, शील्ड आदि प्राप्त होते रहे हैं, जिस कारण मैं अपने टीचिंग स्टाफ की चहेती बन गयी हूँ। यह सब कमाल है शिवबाबा के प्रति मेरे निश्चय व अटूट विश्वास का। मेरा यह विश्वास अनुभव में बदल चुका है। मैं सर्वशक्तिमान परमात्मा की संतान 'मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ।' उन्हीं से मुझे बहुत शक्तियाँ प्राप्त होती जा रही हैं और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है ही।

संस्था के कार्यक्रमों में सहभागिता

ब्रह्माकुमारी संस्था अपने मुख्यालय (आबू-राजस्थान) में, बच्चों के बहुआयामी विकास के लिए हर वर्ष गर्मी की छुट्टियों में राष्ट्रीय स्तर पर शिविर का आयोजन करती है जिसमें बच्चों को ज्ञानवर्धक और स्वस्थ मनोरंजन कराने वाली भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं में निशुल्क भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है। मुझे भी वर्ष 2018 में सेवाकेन्द्र के द्वारा 5 बच्चों के ग्रुप सहित शान्तिवन, आबू रोड में आयोजित इस शिविर में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें भारत के अनेक प्रान्तों से लगभग 2500 बच्चे आये हुए थे। वहाँ आयोजित कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं से भरपूर मनोरंजन प्राप्त हुआ। एक सप्ताह कैसे गुजर गया, पता ही नहीं चला। हमने अनेक एकल और ग्रुप प्रतियोगिताओं में भाग लिया और प्रदर्शन के आधार पर कुछ पुरस्कार भी प्राप्त हुए। सबसे ज्यादा खुशी तो इस बात की हुई कि मेरे और मेरे ग्रुप द्वारा प्रदर्शित एकांकी (नाटिका) 'मायाजीत' को इतना सराहा गया कि हमें संस्था के आबू पर्वत पर स्थित 'ज्ञान सरोवर' के सभागार में भी एकांकी प्ले करने के लिए आमंत्रित किया गया।

बेमिसाल स्वच्छता

मैंने पाया कि इतने बच्चों के होते हुए भी वहाँ के परिसर व भवनों में स्वच्छता अति प्रशंसनीय व बेमिसाल है। काश! सारे भारतवासियों को इतने स्वच्छ रहन-सहन की आदत पड़ जाये तो हमारा देश चमक उठे। वहाँ मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही बच्चों में स्वच्छ, विनम्र और अनुशासित रहने के संस्कार भी जाग्रत होते हैं, जो बच्चों के भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वहाँ से मुझे असीम आनंद व खुशी के साथ-साथ एक नवीन ऊर्जा की प्राप्ति हुई। वहाँ की सुंदर यादें आज भी मन को प्रफुल्लित कर देती हैं।

प्रतिवर्ष 21 जून को मनाये जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मुझे कई सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं में 'सम्पूर्ण योग' विषय पर बोलने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। मुझे ज्ञानामृत पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। मैं हर माह की पत्रिका का इन्तजार करती हूँ और जरूर पढ़ती हूँ। कुछ लेख तो मुझे इतने अच्छे लगते हैं कि उन्हें बार-बार पढ़ती हूँ।

विद्यार्थियों से आग्रह

मेरे प्रिय भाई-बहनो, जब हम सफल होते हैं तो हमें अपने घरवालों और निकट मित्र-सम्बन्धियों से तो शाबाशी मिलती ही है, साथ ही हमें सच्चा आत्म-संतोष भी प्राप्त होता है, जो कर्त्तव्य-पालन को छोड़, गप-शप और व्यर्थ में समय गँवाने से कभी प्राप्त नहीं हो सकता। मैं कहना चाहूँगी कि दिल से मेहनत करो और शिक्षाकाल में टी.वी.देखने तथा मोबाइल फोन पर व्यर्थ की चिट-चैट करने से मुक्त रहो, तो आप सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ते चले जायेंगे। टी.वी.आदि में समय देने की अपेक्षा आप कुछ समय खेल-कूद में लगाओ तो आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहोगे। टी.वी., मोबाइल फोन पर देखी-सुनी बातें और दृश्य फिर अध्ययन के समय याद आते हैं जिससे एकाग्रता बाधित होती है। गर्मियों की छुट्टियों में आप कुछ समय अपनी स्कूली पढ़ाई में देने के अतिरिक्त अपने पसंद की कोई रचनात्मक कला जैसे गायन-वादन-नृत्य आदि सीखने में लगायें। अपना दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक और आशावादी रखें। इससे आप सदा उमंग-उत्साह में रहेंगे और आपकी कार्यक्षमता भी बढ़ेगी।

व्यवहारिक जीवन के मूल्य

अन्य किसी से, चाहे वह किसी भी स्पर्धा में मुझ से आगे जा रहा हो, मैं कभी ईर्ष्या नहीं करती, उसका सम्मान करती हूँ और स्पर्धा में मुझ से निम्नस्तर पर रहने वालों को प्यार करती हूँ। उन्हें और आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करती हूँ। किसी से भी उनकी कमियों के कारण लेशमात्र भी घृणा नहीं करती। किसी ने मेरे साथ बोल-चाल, व्यवहार में अशिष्टता दिखाई तो भी मैं बात को दिल पर नहीं रखती इसलिए सदा खुश रहती हूँ। भगवान शिव भी तो हम अनेक कमियों वालों की कमियाँ न देख प्यार से हमें गुणवान बना रहे हैं। मम्मी-पापा की अनुपस्थिति में भी मैं अपने से कुछ ही बड़ी एकमात्र दीदी से लड़ती-झगड़ती नहीं हूँ। गुस्से की तो जैसे अविद्या ही हो गई है। अपने परिवारजनों की अनुपस्थिति में मुझे घर पर कभी अकेला भी रहना पड़ जाये तो अकेलापन या भय बिल्कुल नहीं लगता क्योंकि मैंने शिवबाबा को अपना बेस्ट फ्रेंड बना लिया है। बाबा हमेशा एक सच्चे दोस्त के रूप में मेरा साथ देते हैं। प्राय: मैं रात को दस बजे तक सो जाती हूँ और सुबह चार बजे उठकर अपने परिवार जनों के साथ आधा घंटा योगाभ्यास करती हूँ।

मेरे माता-पिता ग्रामीण परिवेश से हैं। अभी हम सब शहर में रह रहे हैं। गाँव और अन्य स्थानों से मेहमानों का आना-जाना लगा रहता है। घर में आया प्रत्येक मेहमान हमारे परिवार में शान्ति व खुशी देखकर प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। आगन्तुकों को जब राजयोग द्वारा बिना खर्च के होने वाले ढेर सारे फायदों के बारे में पता चलता है तो वे राजयोग जरूर सीखने का मन बनाकर जाते हैं और हमारे अधिकांश मित्र-संबंधियों ने राजयोगी जीवन अपना भी लिया है। ■■■

कोई हमारी गलतियां निकालता है तो खुशी की बात है क्योंकि कोई तो है जो हमें पूर्ण दोषरहित बनाने के लिये अपना 'दिमाग' और 'समय' दे रहा है।

जेल में हुआ नया जन्म

■■■ ब्रह्माकुमार सुनील, कारागार नासिक (महाराष्ट्र)

मेरे साथ कुछ ऐसी घटना घटी जिससे मुझे उम्रकैद की सजा हो गई। उस घड़ी चारों ओर अंधकार के सिवाय मुझे कुछ नजर नहीं आ रहा था। हर पल यही सोचा करता था कि अब तो जिंदगी खत्म ही हो गई है। न तो मैं जेल का खाना खाता था, न पानी पीने को मन करता था। तनाव बहुत बढ़ गया था और जेल में डर लगने लगा था। रोते-रोते दिन गुजर रहे थे।

अंधकार भरे इस समय में सफेद वस्त्रधारी कुछ भाई-बहनों ने कारावास में प्रवेश किया। हम सभी बन्दी भाइयों को सूचित किया गया कि ये सफेद वस्त्रधारी भाई-बहनें 'ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स' करायेंगे। बहनों द्वारा दिए गए ईश्वरीय ज्ञान से मेरा दिव्य चक्षु खुलना आरम्भ हो गया। महसूस होने लगा कि मैं आत्मा तो अनादि-अविनाशी शिव पिता की संतान हूँ और परमधाम की रहने वाली हूँ। इस महसूसता से मेरा जेल में नया जन्म हो गया। मैं रोज शिवबाबा की मीठी मुरली सुनने लगा। शिवबाबा रोज मुरली में 'मीठे बच्चे' कहकर बुलाते हैं इसलिए मैं शिवबाबा का बहुत मीठा बच्चा बन गया।

'मैं बाबा का और बाबा मेरा, तीसरा ना कोई' अब यही मन्त्र मन में गूँजता है। रोज-रोज मुरली सुनने से मन बाबा के खयालों में खोया रहने लगा है। बुद्धि दिव्य और विशाल बन रही है, संस्कार देव समान महान बन रहे हैं। मैं स्वयं को बहुत भाग्यवान मानता हूँ कि जेल में मुझे स्वयं भगवान मिले हैं, जिन्हें मैं बाहर मंदिरों में, नदियों पर, झाड़ों में, पत्थरों में ढूँढ़ रहा था। जेल में आया तो था अकेला लेकिन अब मेरे साथ शिवबाबा हैं। जिस चीज की तलाश थी वो शिवबाबा देने लगे हैं। सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम – इन सभी ख़ज़ानों से मालामाल हो गया हूँ और इन्हीं खजानों के आधार से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्त हो रहा हूँ। अब जेल में रहते हुए भी जेल जैसा नहीं लगता है, स्वर्ग जैसा महसूस होता है। अब दिल से यही बोल निकलते हैं, वाह! बाबा वाह! ड्रामा वाह! मैं आत्मा वाह!

जिस दिन से ईश्वरीय ज्ञान मिला है, उस दिन से हमेशा खुश रहता हूँ। शिवबाबा का दिया मंत्र 'मनमनाभव' मेरे पास है। मैंने शिवबाबा से वायदा किया है कि यहाँ से जाने के बाद गाँव में गीता पाठशाला खोलूँगा और इस शरीर को बाबा की सेवा में लगाऊँगा। अब इस जेल से और विकारों की जेल से छूटने के लिए मैंने सबसे बड़ा वकील किया है जिसका नाम है सत्यम्-शिवम्-सुंदरम्, परमपिता शिव परमात्मा। शिवबाबा का और जेल के अधिकारियों का बहुत-बहुत धन्यवाद। ■■■

तुमसे प्रीत लगाई है

■■■ ब्र.कु. पायल, फतेहपुर शेखावाटी (राज.)

झूम उठा आनन्द में जीवन,
चहुँ ओर खुशियाँ छाई हैं।
जब से प्यारे भगवन मैंने तुमसे प्रीत लगाई है।।

अब हर पल है होली और दीवाली,
उमंगों की बहार छाई है।
मिट गये ईर्ष्या और द्वेष सभी से,
प्यार की बाँहें फैलाई हैं।
जब से प्यारे भगवन मैंने तुमसे प्रीत लगाई है।।

जाग गयी अज्ञान नींद से,
हर पल बजे ज्ञान-शहनाई है।
देखती हैं आँखें हर पल तुमको,
सासों में याद समाई है।
जब से प्यारे भगवन मैंने तुमसे प्रीत लगाई है।।

लगने लगा अब ये संसार अपना-सा,
मिट गई सब लड़ाई है।
रुकूँ नहीं, अब झुकूँ नहीं,
कदमों में पदम कमाई है।
जब से प्यारे भगवन मैंने तुमसे प्रीत लगाई है।।

ज्ञानी तू आत्मा

■■■ ब्रह्माकुमार राहुल सेठी, लुधियाना (पंजाब)

किसी जंगल में एक संन्यासी रहता था। उसके पास एक कुमार आया और पूछा कि क्या मैं आप से शिक्षा ले सकता हूँ। संन्यासी ने कहा, ठीक है, तुम मेरे साथ रहो, जैसे मैं जीवनयापन करता हूँ, तुम भी करो। सुबह-सुबह जिज्ञासु आते हैं उन्हें जो शिक्षा दूँगा, तुम भी ले लेना। कुमार ने कहा, ठीक है, जो आज्ञा। अगले दिन से सुबह वो संन्यासी जब बाकियों को कुछ ज्ञान की बातें सुनाता तो कुमार भी सुनने बैठ जाता। परन्तु, रोज-रोज लगभग एक-सी बातें ही वो संन्यासी सबको सुनाता। कुमार को लगा कि ये कुछ नया तो सुना ही नहीं रहे हैं, रोज एक ही आत्मा-परमात्मा की बात सुना देते हैं। तभी कुछ दिनों बाद एक पहुँचा हुआ भाई वहाँ आया। कुछ लोग उसके साथ थे जो उसे शास्त्री जी कह कर सम्बोधित कर रहे थे। शास्त्री जी और उसके साथियों से उस कुमार की मुलाकात हुई। शास्त्री जी ने कुछ बातें बोलीं तो कुमार बहुत प्रभावित हुआ। उसने सोचा कि इन्हें संन्यासी जी से भी मिलाना चाहिए ताकि उन्हें पता चले कि ज्ञान क्या होता है।

कुमार ने संन्यासी जी को बुलाया और कहा कि कोई बड़े दार्शनिक आये हैं और आपसे मिलने की कामना रखते हैं। संन्यासी जी आ गए और शास्त्री जी करीब एक घंटे तक बोलते रहे। संन्यासी चुपचाप सुनते रहे। एक घंटे बाद कुमार ने संन्यासी जी को कहा, गुरुजी, इसे कहते हैं ज्ञान। आपने इतने दिनों में जो नहीं सिखाया, इन विद्वान ने एक घंटे में सिखा दिया। संन्यासी बोले, परन्तु ये बोले कब? मैं तो एक घंटे से इंतजार कर रहा था कि अब बोले, अब बोले। कुमार बोला, आपको क्या लगता है, एक घंटे से ये कुछ नहीं बोल रहे थे? संन्यासी ने कहा, हाँ। तुमने ठीक सुना, ये नहीं बोले। कभी इनमें गीता बोलती थी, कभी शास्त्र बोलते थे, कभी कोई ग्रंथ। मगर ये नहीं बोले क्योंकि इनके पास अपना क्या है जो ये बोलें।

इस दृष्टान्त का भावार्थ है कि ज्ञान और सूचनाओं में फर्क है। शास्त्र तो सूचनाओं से भरे पड़े हैं। जब हम उन सूचनाओं से जीवन को दिव्य बनाएँ तभी वे ज्ञान में परिवर्तित होती हैं। इधर-उधर से बातें इकट्ठी कर लेना ज्ञान नहीं है। आचरण संवारना ही सच्चा ज्ञान है।

विचार करें, किसी को अंग्रेजी नहीं आती या शिक्षा ज्यादा नहीं है तो क्या वो अज्ञानी है? कदापि नहीं क्योंकि आंतरिक जगत का ज्ञान शब्दों और शब्दावली का मोहताज नहीं है। शब्दों की जरूरत तब बहुत कम है जब वायब्रेशन काम करते हैं। भगवान कहते हैं, मुझे ज्ञानी नहीं, ज्ञानी तू आत्मा पसन्द है। ज्ञानी तू आत्मा कभी नहीं कहती कि मैं ज्ञानी हूँ, हमेशा अपने आप को विद्यार्थी ही समझती है। कोई भी बोलता है तो उसकी बात वह बड़े ध्यान से सुनती है और जरूरत होने पर ही बोलती है। वह कभी वाद-विवाद में नहीं आती क्योंकि उसे सब पता है कि सही क्या है और गलत क्या है। वह प्रश्नों से पार और निरहंकारी होती है, कभी भी पद का दुरुपयोग नहीं करती। मान-अपमान, जय-पराजय से दूर रहती है। वो ज्ञान का संग्रह इसलिए नहीं करती कि मेरा मान-शान बढ़े और अन्य आत्माओं में दबदबा हो, वह लक्ष्य-केन्द्रित होती है। विस्तार का सार करना और समय का सदुपयोग करना वह जानती है। व्यर्थ और समर्थ में भेद कर वह श्रीमत प्रमाण चलती है। ■■■

1.**नौहर**- चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं समाजसेवी भ्राता परवेश चाचाण, ब्र.कु.रेखा बहन, अग्रवाल नवयुवक सभा अध्यक्ष भ्राता मोन्टी चाचाण तथा ब्र.कु.उर्मिला बहन। 2.**हनुमानगढ़ (टाउन)**- 'श्री सत्यनारायण कथाका आध्यात्मिक रहस्य' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन, पार्षद भ्राता देवेन्द्र, ब्र.कु.किरण बहन, ब्र.कु.नीरू बहनतथा शिक्षिका सरोज बहन। 3.**सूरतगढ़**- चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं डी.वाई.एस.पी.भ्राता वेदप्रकाश, ब्र.कु.अरुण भाई, ब्र.कु.रानी बहन तथा अन्य। 4.**भीम-देवगढ़**- थाना स्कूल में वृक्षारोपण करते हुए प्राचार्य जी, ब्र.कु.राधा बहन तथा स्कूल के बच्चे। 5.**सादुलपुर**- 'अलविदा डायबिटीज' शिविर के बाद डॉ.श्रीमंत साहू का सम्मान करते हुए ब्र.कु.शोभा बहन, ब्र.कु.सुमन बहन, ब्र.कु.शीला बहन, ब्र.कु.नीलिमा बहन तथा अन्य। 6.**भीनमाल**- महात्मा गांधी जी की 150वीं जयन्ती पर आयोजित 'गाधी को जानो' प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम.भ्राता दौलतराम चौधरी, महिला एवं बाल विकास अधिकारी भ्राता घेवर राठौड तथा ब्र.कु.गीता बहन। 7.**झालावाड़**- विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.मीना बहन। मंचासीन हैं डॉ.गोकुल नागर तथा डॉक्टर जी.पी.शर्मा। 8.**कायमगंज**- 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत' अभियान कार्यक्रम में उपस्थित हैं डॉ.मिथलेश अग्रवाल, प्रधानाचार्य भ्राता योगेश तिवारी तथा ब्र.कु.मिथलेश बहन।

बाबा ने स्वप्न में खुलवाया त्रिमूर्ति क्लिनिक

ब्रह्माकुमार डॉ.औदुंबरसदाशिव पावले, एम.बी. बी. एस., टेम्भूर्णी(महा.)

मेरा जन्म सन् 1944 में एक वैष्णव कुल (लिंगायत) में कव्हे गाँव, जिल्हा सोलापुर (महाराष्ट्र) में हुआ। संयुक्त परिवार में माता-पिता, हम पाँच भाई, एक बहन सहित बीस लोग रहते थे। घर पर नित भजन, कीर्तन, पूजा-पाठ होता रहता था, घर के सभी सदस्य बहुत भक्ति-भाव वाले थे तथा गले में शिवलिंग पहनते थे परन्तु मैं मूर्तिपूजा के खिलाफ था। मेरा विचार था कि पत्थर की मूर्ति में भगवान कैसे हो सकता है? इसलिए कभी पूजा-पाठ आदि नहीं करता था और ना ही गले में शिवलिंग पहनता था। परन्तु मैं अपने बड़ों की आज्ञा जरूर मानता था। वे मुझे दिन अनुसार पूजा-सामग्री देकर मंदिर में भेजा करते थे। मंदिर प्राय: वीरान जगह पर होते थे जहाँ नंगे पाव, कंटिली झाड़ियों वाले पथरीले रास्ते से होकर जाता था और पूजा-सामग्री चढ़ा देता था। फिर देखता था कि उसे तो कुत्ता खा रहा है। यह देख मन में बहुत हलचल होती थी, सोचता था कि भूख तो मुझे भी लगी है परन्तु सामग्री तो कुत्ता खा रहा है।

नास्तिक होते हुए भी मन्दिर गया, दर्शन किए

बाल्यकाल से मुझे समाज सेवा का बहुत ख्याल था। मैं डॉक्टर बनकर गरीबों की सेवा करना चाहता था। मैंने सन् 1970 में सरकारी मेडिकल कॉलेज, मिरज से एम. बी. बी. एस. पास कर लिया और एक सरकारी अस्पताल में चिकित्सा अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएँ देनी शुरू कर दीं। सन् 1976 में मेरा तबादला पेन नाम के एक गाँव (जिला कोलाबा) में हुआ। एक बार जून मास की अंगारकी चतुर्थी (महाराष्ट्र का एक विशेष पवित्र दिन) के दिन मेरा पाली गाँव (महाराष्ट्र के अष्टविनायक में से एक) में परिवार नियोजन शिविर हेतु जाना हुआ। वहाँ के स्टाफ के लोगों ने हार, नारियल, प्रसाद आदि लाकर मुझे दिये तथा निवेदन किया कि आप पहली बार यहाँ आए हैं, तो पहले अष्टविनायक के दर्शन करें फिर आपरेशन करें। नास्तिक होते हुए भी उनका दिल रखने के लिए मैंने वैसा ही किया, फिर परिवार नियोजन के आपरेशन्स करके, उसी शाम वापिस अपने मुख्यालय पेन में लौट आया।

स्वप्न में मिला आदेश

उस रात जब मैं सो रहा था तब स्वप्न में एक ऊँचे-ऊँचे, प्रकाशमय काया वाले वृद्ध पुरुष खड़े दिखाई दिये। उनके सिर के पीछे से बहुत तेजोमय प्रकाश की किरणें मेरे चेहरे पर पड़ रही थीं और उनके शब्द मेरे कानों में पड़े –'व्हाई आर यू वेस्टिंग यूवर टाइम, गो एण्ड स्टार्ट ऍट टेम्भूर्णी एज ए त्रिमूर्ति क्लिनिक (Why areyou wasting your time, go and start at Tembhurni a trimurati clinic) आप अपना समय क्यों बरबाद कर रहे हो, टेम्भूर्णी जाओ और त्रिमूर्ति क्लिनिक शुरू करो।' फिर मेरी आँखें खुल गईं। मैंने आसपास नजर दौड़ाई, वहाँ कोई नहीं था। रात के करीब 11:30 बज रहे थे। मैंने तुरन्त अपनी युगल (राजनैतिक विज्ञान में मास्टर डिग्रीधारी – हेमा जी), जो उस समय हमारे घर सोलापुर में थी, को पत्र लिखा जिसमें इस स्वप्न का वर्णन किया तथा अब क्या करना चाहिए, इस विषय में राय पूछी। उनका उत्तर तीन दिन बाद आया कि नौकरी से त्यागपत्र देकर, आपको जो स्वप्न में आदेश हुआ है, उसे पूरा करो। मैं दूसरे ही दिन सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर अपने गांव लौट आया, जो टेम्भूर्णी से 30 कि. मी. दूर है, जहाँ 17 अगस्त, 1976 श्री कृष्णजन्माष्टमी के दिन त्रिमूर्ति क्लिनिक का विधिवत् उद्घाटन कर सेवाएँ शुरू कर दीं।

उस गाँव में न लाइट (बिजली) थी, न पक्के रास्ते थे, न शौचालय की सुविधाएँ थीं, पीने का पानी भी एक किलोमीटर दूर से लाना पड़ता था। हमारी आर्थिक स्थिति भी उस वक्त ठीक नहीं थी, फिर भी चार साल तक बड़े धैर्य से सभी विपरीत परिस्थितियों का सामना करता रहा। मेरी युगल के अलावा किसी भी मित्र-संबंधी को उस स्वप्न के बारे में पता नहीं था इसलिए वे सोचते थे कि इतनी अच्छी

सरकारी नौकरी छोड़कर यह क्यों यहाँ मेहनत कर रहा है?

कल-कल करते बीत गए ढाई मास

चार साल के बाद सन् 1980 में एक दिन, एक कुमार गाँव के सिंचाई विभाग में पदासीन हुआ। उसने उस गाँव में एक प्रदर्शनी लगाई, जिसे देखने के लिए मेरे किराए के क्लिनिक के मालिक भी गए। उन्हें वह प्रदर्शनी बहुत पसंद आई और उस शाम वे उस युवक को मुझसे मिलवाने के लिए मेरे क्लिनिक में ले आए। युवक के प्रसन्नमुख, पवित्रता के तेज और सादगी ने मुझे बहुत आकर्षित किया। युवक ने बड़ी नम्रता से मुझे पूछा, डॉक्टर जी, आपके पास थोड़ा समय है? तब रात के 9 बज रहे थे, कुछ मरीज मेरे सामने थे जिन्हें अभी चेक करना था, मेरा रात्रि का भोजन होना भी बाकी था इसलिए मैंने कहा, भाई, आप कल आइएगा। वह कुमार दूसरे दिन भी समय पर पहुंच गया परन्तु व्यस्त होने के कारण मैं उस दिन भी समय नहीं दे पाया और उसे अगले दिन आने के लिए कह दिया। इस प्रकार कल-कल करते ढाई मास बीत गये। कुमार भाई हर दिन निश्चित समय पर पहुंच जाते और मैं मरीजों में ही व्यस्त रहता।

की क्रोध छोड़ने की प्रतिज्ञा

एक दिन वह भाई एक पम्फलेट (पर्चा) ले आए जिसमें लिखा था, 'काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार-ईर्ष्या-द्वेष आदि में से किसी एक पर निशान लगाइये, जिसे अगले 8 दिनों में आपको छोड़ना है।' मैं बहुत क्रोधी था। मुझे गाँव में घूम-घूम कर मरीजों को देखना पड़ता था और आवश्यक सुविधाएँ न होने के कारण भी मुझे जल्दी गुस्सा आ जाता था। अत: मैंने उस पर्चे में क्रोध पर निशान लगा दिया और क्रोधमुक्त होने का संकल्प किया। आठ दिन पूरे होने पर वह कुमार मुझसे मिलने फिर आ पहुंचा। उसे देखते ही मुझे आठ दिन पहले पर्चे पर निशान लगाकर की हुई प्रतिज्ञा याद आई, जिसे मैं भूल ही चुका था। तब मुझे बहुत आत्मग्लानि हुई और तुरन्त क्लिनिक बन्द कर कुमार भाई से कहा, आप जो कहना चाहते हैं, वह आज मैं जरूर सुनूँगा। एक लालटेन के प्रकाश में उसे मैं घर की छत पर ले गया। मेरे दोनों बच्चे (एक 8 साल का, दूसरा 3 साल का) सो गए थे अत: मेरी युगल भी छत पर हमारे पीछे-पीछे आ पहुँची यह देखने के लिए कि हम दोनों क्या कर रहे हैं। इसके बाद कुमार भाई ने हम दोनों को ईश्वरीय ज्ञान का परिचय दिया और अगले सात दिनों में हमारा साप्ताहिक कोर्स पूरा कर दिया। वह 1980 की अश्विन मास की पूर्णिमा की रात थी। इस तरह हमारा अलौकिक जन्म हुआ और तब मुझे समझ में आया कि स्वप्न में आए वे वृद्ध पुरुष ब्रह्मा बाबा और उनके तन में अवतरित शिव बाबा ही थे। इन्होंने ही त्रिमूर्ति क्लिनिक खोलने का इशारा दिया था। तब से हम नियमित रूप से अमृतवेले योगाभ्यास , मुरली क्लास, खान-पान की शुद्धि आदि करने लगे। दो मास के अंदर ही मुझे मधुबन वरदान भूमि में राजयोग शिविर करने आने का सौभाग्य प्राप्त हो गया।

दृष्टि पाकर भूल गया सुधबुध

शिविर में आए हुए हम थोड़े से भाई थे। मधुबन में कदम रखते ही मुझे स्मृतियाँ जागृत होने लगी कि यही हमारा दैवी परिवार है, हम इसी कुल के हैं आदि-आदि। पाण्डव भवन के ज्ञान-विज्ञान भवन में हमारी रहने की व्यवस्था की गई। पाण्डव भवन में ही हम सभी भाइयों को राजयोग शिविर दादी चंद्रमणि जी, निर्वैर भाई जी और शीलू बहन जी के द्वारा करवाया गया जो करीब तीन दिन तक चला। चौथा दिन मधुबन से वापसी का दिन था। हम सभी को हिस्ट्री हॉल में बैठाया गया। एक संदली पर दादी प्रकाशमणि जी बैठे थे, दूसरी संदली पर दीदी मनमोहिनी जी बैठे थे। हमें दो ग्रुप में बाँटा गया, हमारे ग्रुप को दीदी जी के पास जाकर दृष्टि तथा टोली लेने को कहा गया और दूसरे ग्रुप को दादी जी के पास जाकर दृष्टि तथा टोली लेने के लिए कहा गया। मैं जब दीदी जी के सामने पहुँचा, उन्होंने पूछा, डबल डाक्टर बनोगे, डबल हास्पिटल खोलोगे? मैंने कहा, मैं डबल हास्पिटल खोलकर आया हूँ (त्रिमूर्ति क्लिनिक)। फिर दीदी जी ने मुझे टोली दी तथा इतनी पावरफुल दृष्टि दी कि मैं देह की सुधबुध ही भूल गया। आज भी वह दृष्टि तथा उससे हुआ अनुभव मुझे बहुत स्पष्ट रीति से याद है। उस वक्त

शेष भाग पृष्ठ 34 पर ...

1.छर्रा-उ.प्र.के वित्त, चिकित्सा शिक्षा एवं प्राविधिक शिक्षा राज्यमंत्री भ्राता संदीप सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रेखा बहन तथा ब्र.कु.रितेश भाई। **2.गंगोह (सहारनपुर)-** उपसेवाकेन्द्र के निमित्त भूमिशुद्धिकरण कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए सांसद भ्राता प्रदीप चौधरी, विधायक भ्राता रविन्द्र कुमार मोनू, जिला पंचायत सदस्य भ्राता नवीन चौधरी, ब्र.कु.भारत भूषण, ब्र.कु.रानी बहन तथा ब्र.कु.सन्तोष बहन। **3.कानपुर (कोयला नगर)-** सेवाकेन्द्र के नये भवन के लिए भूमिशुद्धिकरण करते हुए सांसद चौ.सुखराम सिंह, ब्र.कु.विद्या बहन तथा ब्र.कु.ज्योति बहन। **4.शमसाबाद (आगरा)-** विधायक भ्राता जीतेन्द्र वर्मा को परमात्मा का परिचय देते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन। **5.हल्द्वानी-** चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता बंशीधर भगत, ब्र.कु.दीपा बहन, जिला पंचायत सदस्य बहन बेला तोलिया तथा बृजमोहन मेहता भाई। **6.देहरादून-** 'मेरा उत्तराखण्ड-व्यसनमुक्त उत्तराखण्ड' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु.मंजू बहन, डॉ.रामबाबू, ब्र.कु.डॉ.बनारसीलाल शाह, आचार्य शिवप्रसाद ममगाई तथा डॉ.रामप्रकाश। **7.हाथरस-** दीपावली के उपलक्ष्य में जिलाधिकारी भ्राता प्रवीण कुमार लक्षकार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बबीता बहन। **8.अमेठी-** अमेठी की रानी व पूर्व शिक्षामंत्री बहन अमीता सिंह से ज्ञानचर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुषमा बहन। **9.जौनपुर-** पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष भ्राता दिनेश टंडन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मंजू बहन।

1.जयपुर (म्यूजियम)- भाजपा प्रदेशाध्यक्ष भ्राता सतीश पूनिया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुषमा बहन। **2.जयपुर (श्रीनिवास नगर)**- नवरात्रि झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् मेयर भ्राता विष्णु लाटा, भ्राता सीताराम अग्रवाल, ब्र.कु.मीना बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **3.कोटा**- देवियों की चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए महापौर भ्राता महेश विजय, कांग्रेस के अध्यक्ष भ्राता हिम्मत सिंह हाडा, ब्र.कु.उर्मिला बहन तथा अन्य। **4.अयोध्या**- उपनिबंधक भ्राता एस.बी.सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुधा बहन तथा ब्र.कु.उषा बहन। **5.भीलवाड़ा (विजयसिंह पथिक नगर)**- चैतन्य देवियों की झाँकी का शुभारम्भ करने के बाद ब्र.कु.तारा बहन, ब्र.कु.इंद्रा बहन, मॉर्डन वूलेन के प्रबन्ध निदेशक भ्राता सतीश मेहता, पूर्व यू.आई.टी.अध्यक्ष भ्राता अक्षय त्रिपाठी तथा जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता प्रकाश चन्द्र पगारिया ईश्वरीय स्मृति में। **6.फाजिलनगर**- चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् थाना अध्यक्ष भ्राता हरेन्द्र कुमार मिश्र एवं चौकी प्रभारी भ्राता वेद प्रकाश सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.भारती बहन। **7.रानी**- मैराथन दौड़ को हरी झंडी दिखाते हुए तहसीलदार भ्राता जितेन्द्र राठोड, बी.डी.ओ.भ्राता एन. कुमावत। साथ में ब्र.कु.रानी बहन तथा अन्य। **8.मैनपुरी**- थाना इन्चार्ज भ्राता विनेश यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अवन्ती बहन तथा ब्र.कु.कृपा बहन।

पृष्ठ 31 का शेष भाग ...

मैं मात्र दो मास का बाबा का बच्चा था। फरिश्ता क्या होता है, मुझे नहीं पता था परन्तु वहाँ के तीन दिनों में मुझे फरिश्ता स्थिति का, एकदम हल्की अवस्था का अनुभव हुआ। उन तीन दिनों में न मुझे अपने मित्र-सम्बन्धियों की याद आई, न युगल की, न अपने छोटे बच्चों की, न फोन किया, न अखबार द्वारा बाहरी दुनिया की कोई खबर पढ़ी या सुनी। वे दिन अविस्मणीय दिन बन गए।

छूट गई गोलियाँ

घर वापस जाने के लिए, पाण्डव भवन से निकलने से पहले मैं बाबा के कमरे में गया। मैंने सुना था कि यह कमरा, विश्व में पवित्रता का सबसे ऊँचा केन्द्रबिन्दु है और यहाँ पर जो भी संकल्प किया जाता है, वह पूर्ण हो जाता है। मुझे बाल्यकाल से ही एलर्जिक अस्थमा (फेफड़े की एक बीमारी) था जिससे मुझे बार-बार सर्दी-जुकाम होता रहता था और रोजाना मैं 5-8 गोलियाँ खाता था। बाबा के कमरे में मैंने शुभ संकल्प किया कि आज से इन गोलियों की छुट्टी। मैं तब 38 साल का था, आज 75 साल का हो गया हूँ परन्तु उस दिन से आज तक दुबारा उन गोलियों को लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। इसके लिए मैं रोज तो क्या, घड़ी-घड़ी (हर पल) बाबा वैद्यनाथ को शुक्रिया कहता रहता हूँ।

आँखें हुई सजल

फिर हम सभी पाण्डव भवन के गेट पर विदाई लेने के लिए एकत्रित हुए। मेरा दिल जाने के लिए तैयार नहीं था परन्तु कैसे ठहर सकता था, घर की जिम्मेवारियाँ थीं मुझपर। मेरी आँखों से अपने आप आँसू गिरने लगे। मैं जिंदगी में कभी नहीं रोया था। घर में बड़ा होने के नाते अपने छोटे भाई-बहनों की जिम्मेवारियाँ निभाता था। सन् 1980 में पिता के शरीर छोड़ने के बाद मेरी जिम्मेवारियाँ अधिक बढ़ गई थीं परन्तु मैं कभी रोया नहीं था। उस दिन मधुबन से वापस घर जाने की घड़ी आने पर स्वतः ही आँखें सजल हो आई थीं।

मेरे लौकिक पिता का नाम सदाशिव था। उनके देहावसान के कुछ महीनों बाद ही मुझे सच्चे सदाशिव बाबा का परिचय मिला। इस तरह बाबा ने मुझे डबल सदाशिव पुत्र बना दिया। डबल डॉक्टर बना दिया। मेरे दोनों बच्चे न्यूयार्क में हैं। बड़ा बेटा डॉ. अमित, हार्ट सर्जन है तथा छोटा बेटा आशीष, एक अमेरिकन कम्पनी का एम. डी. (मैनेजिंग डायरेक्टर) है। मैं वर्ष में 6 मास (अक्टूबर से मार्चतक) शान्तिवन के एवर हैल्दी हास्पिटल में निशुल्क सेवाएँ देता हूँ। मेरी युगल हेमा टेम्भूर्णी में गीता पाठशाला चलाती हैं। शेष छह मास हम न्यूयार्क में पुत्रों के पास चले जाते हैं और वहाँ भी नजदीकी सेवाकेन्द्रों पर ईश्वरीय ज्ञान, योग, सेवा का लाभ उठाते रहते हैं। सामाजिक सेवाओं के लिए मुझे अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।सन् 1999 में आध्यात्मिक कार्य के लिए टेम्भूर्णी भूषण पुरस्कार, सन् 2000 में आध्यात्मिक-समाजिक कार्य के लिए 'विकास रत्न' देहली से तथा सन् 2002 में लिंगायत समाज भूषण, वीरशैव समाज भूषण। ■■■

सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

1

2

3

4

5

6

7

8

9

1.**वर्धा-** सेवाकेन्द्र के नए भवन के लिए शिलान्यास पट्टिका का अनावरण करते हुए राजयोगिनी दादी इशू जी, ब्र.कु.रजनी बहन, ब्र.कु.रुक्मिणी बहन, कवि इमरान राही, ब्र.कु.माधुरी बहन तथा अन्य। 2.**गुरुग्राम (ओ.आर.सी.)-** किसान सशक्तिकरण सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए पंचायत राज मंत्रालय के संयुक्त सचिव डॉ.संजीव पतजोशी, अतिरिक्त सचिव भ्राता बी.प्रधान, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.क.राजू भाई, ब्र.कु.राजकुमारी बहन, ब्र.कु.जयप्रकाश भाई तथा ब्र.कु.राजेन्द्र भाई। 3.**कोची-** ब्रह्माकुमारीज के नए मलयालम चैनल 'राजयोग टी.वी.' का शुभारम्भ करते हुए केन्द्रीय विदेशी मामलों के राज्यमन्त्री भ्राता मुरलीधरन, ब्र.कु.करुणा भाई, संगीत निदेशक भ्राता विद्याधरन मास्टर, सांसद बी.बेहानन, ब्र.कु.राधा बहन तथा अन्य। 4.**शान्तिवन (आबू रोड)-** लोकल कान्फ्रेस ऑफ यूथ के 5वें एडिशन का शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.शीलू बहन, यू.एन.डी.पी.के वरिष्ठ संयोजक भ्राता प्रभजोत सोढ़ी, सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट भ्राता आकाश वशिष्ठ तथा अन्य। 5.**ताइवान (तायपेई)-** 'आत्मा की आंतरिक शक्तियों की अनुभूति' विषयक प्रवचन के बाद ब्र.कु.आत्मप्रकाश, ब्र.कु.मौरीन, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य समूह चित्र में। 6.**गुवाहाटी-** आसाम के पंचायत तथा ग्राम विकास मन्त्री भ्राता नवकुमार डोले को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीला बहन। 7.**खरगोन-** किसान महोत्सव में आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.किरण बहन। 8.**फूलबानी-** ज्ञानचर्चा के बाद उड़ीसा के व्यापार तथा यातायात मन्त्री भ्राता पदमनाभ बेहरा, ब्र.कु.भारती बहन, ब्र.कु.अर्जुन भाई तथा अन्य समूह चित्र में। 9.**पटना सिटी (गाय घाट)-** चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्‌घाटन के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं बिहार के पथ निर्माण मंत्री भ्राता नंदकिशोर यादव, ब्र.कु.रानी बहन, ब्र.कु.बबीता बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : December, 2019.

1.लखनऊ- 'गुलजार उपवन' की शिलान्यास पट्टिका का अनावरण करने के बाद राजयोगिनी दादी जानकी जी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र.के जलशक्ति मन्त्री डॉ.महेन्द्र सिंह, कैबिनेट मंत्री भ्राता आशुतोष टण्डन, ब्र.कु.राधा बहन, ब्र.कु.हंसा बहन तथा अन्य प्रसन्न मुद्रा में।

2.भुवनेश्वर- भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता रामनाथ कोबिन्द को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.लीना बहन। साथ में अन्य भाई-बहनें।

3.हैदराबाद (शान्ति सरोवर)- 'होप, हैप्पीनेस, हॉरमनी' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु.कुलदीप बहन, तेलंगाना की राज्यपाल महामहिम डॉ.बहन टी.सुन्दरराजन गारु, ब्र.कु.चक्रधारी बहन तथा अन्य।

4.रायपुर- छ.ग.के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेश बघेल को भाई दूज के अवसर पर आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.कमला बहन।